Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ
وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 2

अंक 1-2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

5-12 जनवरी 2017 ई 6-13 रबीउस्सानी 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰہَ یَبْعَثُ لِھٰذِہِ الْاُمَّۃِ عَلٰی رَأْسِ کُلِّ مِائَۃِ سَنَۃٍ مَنْ یُّجَدِّدُ لَھَا دِیْنَھَا

यही समय मसीह मौऊद के प्रकट होने का समय है और मैं ही वह व्यक्ति हूं जिसने इस सदी के शुरू होने से पहले दावा किया मैं ही वह एक हूँ जिस ने ईसाइयों और अन्य क़ौमों को ख़ुदा के निशानों के साथ सचेत किया। इसलिए जब तक मेरे इस दावे के विरुद्ध इन्हीं विशेषताओं के साथ कोई दूसरा दावा करने वाला पेश न किया जाए तब तक मेरा यह दावा साबित है कि वह मसीह मौऊद जो अंतिम समय का मुजद्दिद है वह मैं ही हूँ।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

(1) पहला निशान-

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰہَ یَبْعَثُ لِھٰذِہِ الْاُمَّۃِ عَلٰی رَأْسِ کُلِّ مِائَۃِ سَنَۃٍ مَنْ یُّجَدِّدُ لَھَا دِیْنَھَا

अबू दाऊद से रिवायत है कि ख़ुदा प्रत्येक सदी के सिर पर इस उम्मत के लिए एक व्यक्ति भेजेगा जो उसके लिए धर्म को नवीन करेगा और अब इस सदी का चौबीसवां साल गुज़रता है और संभव नहीं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वर्णन किए हुए में देरी हो। अगर कोई कहे कि अगर यह हदीस सही है तो बारह सदियों को मुजद्दियों के नाम बतलाएं। इसका जवाब यह है कि यह हदीस उम्मत के उल्मा में प्रमाणित चली आई है अब अगर मेरे दावे के समय इस हदीस को बनावटी भी करार दिया जाए तो मौलवी साहिबों से यह भी सच है कुछ बड़े बड़े मोहद्दसीन ने अपने ज़माने में ख़ुद मुजद्दिद होने का दावा किया है। कुछ ने किसी दूसरे को मुजद्दिद बनाने की कोशिश की है। तो अगर यह हदीस सही नहीं तो उन्होंने ईमानदारी से काम नहीं लिया और हमारे लिए यह जरूरी नहीं कि सभी मुजद्दिद का नाम हमें याद हों यह समस्त बातों का ज्ञान तो ख़ुदा तआला की विशेषता है हमें भविष्य के जानने का ग़ैब होने का दावा नहीं मगर उतनी ही जितना ख़ुदा बतलाए। इस के अतिरिक्त यह उम्मत दुनिया के एक बड़े हिस्सा में फैली हुई है और ख़ुदा की युक्ति कभी किसी देश में मुजद्दिद पैदा करती है और कभी किसी देश में तो ख़ुदा के कामों का कौन पूरा ज्ञान रख सकता है और कौन इसके ग़ैब को जान सकता है। भला यह तो बताओ कि हज़रत आदम से लेकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक प्रत्येक क़ौम में नबी कितने गुज़रे हैं। अगर तुम यह बतला दोगे तो हम मुजद्दिद भी बतला देंगे। स्पष्ट है कि ज्ञान के न होने से वस्तु का न होना अनिवार्य नहीं है और यह भी अहले सुन्नत में मानी हुई बात है कि आख़री मुजद्दिद इस उम्मत का मसीह मौऊद है जो अंतिम समय में प्रकट होगा। अब जांचने योग्य यह बात है कि यह आख़री समय है या नहीं। यहूदी तथा ईसाई दोनों जातियां इस पर सहमत हैं कि यह आख़री समय है अगर चाहो तो पूछ कर देख लो। अकाल पड़ रहा है भूकंप आ रहे हैं। प्रत्येक प्रकार की आदत से हट कर तबाहियाँ शुरू हैं तो क्या यह आख़री समय नहीं? और इस्लाम के सालेहीन ने भी इस युग को आख़री ज़माना बताया है और चौदहवीं सदी में भी तेईस साल बीत गए हैं। तो यह शक्तिशाली तर्क इस बात पर है कि यही समय मसीह मौऊद के प्रकट होने का समय है और मैं ही वह व्यक्ति हूं जिसने इस सदी के शुरू होने से पहले दावा किया और मैं ही वह एक व्यक्ति हूं जिस के दावे पर पच्चीस साल बीत गए और अब तक जीवित हूं और मैं ही वह एक हूँ जिस ने ईसाइयों और अन्य क़ौमों को ख़ुदा के निशानों के साथ सचेत किया। इसलिए जब तक मेरे इस दावे के विरुद्ध इन्हीं विशेषताओं के साथ कोई दूसरा दावा करने वाला पेश न किया जाए तब तक मेरा यह दावा साबित है कि वह मसीह मौऊद जो अंतिम समय का मुजद्दिद है वह मैं ही हूँ। ज़माना में ख़ुदा ने नौबतें रखी हैं। एक वह समय था कि ख़ुदा के सच्चे मसीह को सलीब ने तोड़ा और उसे घायल किया था और आख़री ज़माना में यह भाग्य में था कि मसीह सलीब को तोड़ेगा अर्थात आसमानी निशानों से कफ्फार: की आस्था को दुनिया से उठा देगा। इवज़ मुआवज़ा गिला नदारद।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 220 -202)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

नए साल की शुरूआत
और
हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह

हज़रत खलीफतुल मसीह राबेरहमहुल्लाह फरमाते हैं :

अगर आप अल्लाह तआला से संबंध बनाना चाहते हैं तो आप को ख़ुदा तआला से प्यार और मुहब्बत का इतना गहरा और इतना सही और इतना स्थिर संबंध बनाना होगा कि दुनिया की कोई हालत आप के इरादे को बदल न सके। आप इज्ज़त के साथ सिर उठाकर हर जगह घूमें फिरें और महसूस करें कि आप आज़ाद हैं और वे गुलाम हैं।

एक बार इंग्लैंड में एक बड़ी दिलचस्प घटना हुई । वहाँ हर साल एक जनवरी को लोगों की जो हालत होती है वह आप ने सुनी होगी। रात बारह बजते हैं और अभद्रता का एक तूफान सड़कों पर उमड़ आता है। इस समय हर आदमी को आज़ादी होती है वह जिसे चाहे गले लगाए और प्यार करे, चाहे वह कितना ही गंदा क्यों न हो उसके मुंह से शराब की बदबू आती हो या और कई प्रकार की गंदगी लगी हो। ख़ैर रात के बारह बज रहे थे योस्टन के रेलवे स्टेशन पर गाड़ी के इंतज़ार में मैं बैठा हुआ था। वहाँ किसी काम के लिए गया हुआ था उस समय खत्म हो कर वापस घर जा रहा था तो जिस तरह दूसरे अहमदियों को यह विचार आता है कि हम साल का नया दिन नफिल से शुरू करें इसी तरह मुझे भी यह ख्याल आया। इसलिए मैंने वहां नफिल पढ़ने शुरू कर दिए। कुछ देर के बाद मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास एक आदमी खड़ा रो रहा है और रो भी इस तरह से जिस तरह बच्चे हिचकियां ले लेकर रोते हैं। हालांकि इस स्थिति में नमाज़ पढ़ता रहा लेकिन थोड़ी सी Disturbance हुई कि यह क्या कर रहा है। जब नमाज़ खत्म हुई तो जब मैं उठ खड़ा हुआ था तो वह दौड़कर मेरे साथ लिपट गया और मेरे हाथों को चूमा। मैंने कहा क्या बात है, मैं तो आप को जानता नहीं। उसने कहा आप नहीं मुझे जानते लेकिन मैं आपको जान गया हूँ। मैंने कहा आप का क्या मतलब है। उसने कहा कि सारा लंदन आज नए साल की शुरुआत में ख़ुदा को भुलाने पर तुला हुआ है और एक आदमी मुझे ऐसा नज़र आ रहा है जो ख़ुदा को याद रखने पर तुला हुआ है मैं कैसे आप को न पहचानुं। अत: इस बात ने उस पर इतना गहरा प्रभाव कि जैसा किया मैंने उल्लेख किया है वह बच्चों की तरह हिचकियां ले कर रोने लग गया।

इसलिए आप की असल आज़ादी ख़ुदा की याद में है। दूसरी सारी दुनिया ग़ुलाम है अपने रस्मो रिवाज, शैतान की, कामुकता और अपनी इच्छाओं की लेकिन यह आप हैं जिन्हों ने ख़ुद भी आज़ाद फिरना है और उन लोगों को भी आज़ादी देनी है। अगर आप उन के समाज से प्रभावित हो गए और उनके ग़ुलाम बन गए तो हज़रत मसीह मौऊद का वह कौन नाम लेवा होगा जो उन को आज़ादी बख्शेगा। आप ही प्रतिनिधि हैं इसलिए आचरण की महानता पैदा करें। अपने अल्लाह से सम्बन्ध जोड़ें वह अपने लिए तो चमत्कार दिखाएगा। फिर आप को यह पूछना नहीं पड़ेगा कि चमत्कार किया होता है। फिर आप लोगों को यह बताएंगे कि चमत्कार किया होता है।

(ख़ुत्बाते ताहिर भाग 2 पृष्ठ 509)

☆ ☆ ☆

तहरीक जदीद के 83 वें बरकतों वाले साल के आरम्भ का एलान
और
मुख़लसीन जमाअत अहमदिया भारत के सेवा में ज़रूरी निवेदन

सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 11 नवम्बर 2016 ई को अपने ज्ञान वर्धक ख़ुत्बा जुम्अ में तहरीक जदीद के 83वें बरकतों वाले साल का एलान फरमाया। हुज़ूर अनवर ने फरमाया:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर वित्तीय कुरबानी पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि

"दुनिया में इंसान माल से बहुत प्यार करता है इसी लिए ताबीरुर्या में लिखा है कि अगर कोई व्यक्ति देखे कि उसने जिगर निकालकर किसी को दिया है तो इसका अर्थ माल है।" फरमाते हैं "यही कारण है कि वास्तविक तक्वा और ईमान प्राप्त करने के लिए फरमाया لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (आले इम्रान :93)वास्तविक नेकी को हरगिज़ न पाओगे जब तक कि तुम प्यारी चीज़ में से कुछ खर्च नहीं करोगे। क्योंकि अल्लाह की सृष्टि के साथ सहानुभूति और व्यवहार का एक बड़ा हिस्सा माल खर्च करना है जिसके बिना ईमान पूर्ण और सुदृढ़ नहीं होता....इसलिए माल का अल्लाह तआला की राह में खर्च करना भी इंसान की सआदत और तक्वा की एक और कसौटी है।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 95-96 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

हुज़ूर ने और फरमाया कि

"आजकल की दुनिया समझती है कि माल इकट्ठा करना और उसे केवल अपने आराम और सुविधा के लिए खर्च करना ही उनके लिए ख़ुशी और शांति का कारण बन सकता है लेकिन एक मोमिन जिस को धर्म का वास्तविक एहसास और चेतना हो समझता है कि अल्लाह तआला ने दुनिया की नेअमतें और सुविधाएं मनुष्य के लिए पैदा फरमाई हैं लेकिन जीवन का मूल उद्देश्य अल्लाह तआला की ख़ुशी है तक़्वा पर चलना है। अल्लाह तआला का हक अदा करना है और उस की प्रजा का हक देना है।"

ख़ुत्बा जुम्अ के अन्त में हुज़ूर ने फरमाया कि

"1934 ई में अहरार जमाअत को ख़त्म करने की बातें करते थे। कादियान की ईंट से ईंट बजाने की बातें करते थे, तब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने तहरीक जदीद की घोषणा की। दुनिया में मिशनरी भेजने की योजना बनाई। तब्लीग़ की एक व्यापक योजना बनाई गई और आज अल्लाह तआला की कृपा से दुनिया के हर देश में जमाअत अहमदिया को जाना जाता है और 209 देशों में जमाअत की स्थापना हो चुकी है।......आज दुनिया के इस पश्चिमी कोने से सारी दुनिया में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संदेश को आप का एक ग़ुलाम और छोटा सेवक पहुंचा रहा है। "

सय्यदना हुज़ूर अनवर के इस ख़ुत्बा जुम्अ के आलोक में मुख़लसीन जमाअत अहमदिया भारत से निवेदन किया जाता है कि वह आर्थिक कुरबानी की ज़रूरत और महत्तव को अनुभव करते हुए चन्दा तहरीक जदीद में पहले से बढ़ कर हिस्सा लें और पहले अवकाश में अपने सैक्रेटरी तहरीक जदीद से सम्पर्क कर के स्तरी वादे पेश करने के साथ जितना शीघ्र हो सके अदा करने की भी कोशिश करें और इस के नतीजा में अल्लाह तआला के असीम फज़्लों रहमतों और बरकतों से लाभान्वित हों। अल्लाह तआला हमें इस की तौफीक प्रदान फरमाए। आमीन

(वकीलुल माल तहरीक जदीद)

☆ ☆ ☆

अहमदिया ख़िलाफ़त की ताकत का राज़

हज़रत ख़लीफ़ुतल् मसीह राबे रह्महुल्लाह ने फर्माया:

"अहमदिया खि़लाफ़त की शक्ति का राज़ दो बातों में है। एक समय के ख़लीफ़ा के अपने तक़्वा में और एक अहमदिया जमाअत के समग्र तक़्वा में। जमाअत का जितना तक़्वा जमाअत के रूप में बढ़ेगा अहमदियत में इतनी महानता और शक्ति पैदा होगी। समय के ख़लीफ़ा का व्यक्तिगत तक़्वा का जितना विकास होगा उतनी ही अच्छी सयादत और नेतृत्व जमाअत को नसीब होगी। ये दोनों चीजें एक साथ एक ही रूप में एक दूसरे के साथ मिल कर विकास करती हैं।"

(ख़ुत्बा जुम्मा 25 जून 1982 ई)

ख़ुत्बः जुमअः

पिछले दिनों मैं कनाडा के दौरे पर था लगभग छह सप्ताह का कार्यक्रम था। अल्लाह तआला की कृपा से यह दौरा हर लिहाज़ से, जमाअत के कार्यक्रमों के लिहाज़ से भी और दूसरों के साथ कार्यक्रमों के मामले में भी मुबारक रहा।

कनाडा की जमाअत भी दुनिया के कई अन्य जमाअतों की तरह ईमानदारी और वफा में आगे कदम बढ़ाने वाली जमाअतों में से है। अल्लाह तआला की कृपा से युवा लड़के भी और लड़कियां भी जमाअत के कार्यों के लिए आगे बढ़ने की भावना लिए हुए हैं। विशेष रूप से प्रैस और मीडिया के हवाले से युवाओं ने बहुत काम किया है। व्यापक परिचय की कोशिश की है और अल्लाह तआला ने उनकी इन कोशिशों को फल भी लगाया। लेकिन असल बात यह है कि यह विशेष रूप से अल्लाह तआला का फज़्ल हुआ है। इन लोगों ने तो उंगली लगाई थी और अल्लाह तआला ने इसमें अपार बरकत डाल दी बल्कि ये यह काम करने वाले लड़के ख़ुद स्वीकार करते हैं कि हमारी उम्मीदों से बहुत बढ़कर हमें प्रतिक्रियाएं मिली हैं।

अल्लाह तआला की कृपा से वहाँ तीन नई मस्जिदें बनाई हैं लेकिन दो का ऐसा फनगशन था जिस में दूसरों को बुलाया गया था। संसद में भी एक फनगशन हुआ। York विश्वविद्यालय में भी संबोधन किया। टोरंटो में शांन्ति संगोष्ठी हुई। कैलगरी में शान्ति संगोष्ठी हुई जिसमें दूसरों के सामने इस्लामी शिक्षाओं को प्रस्तुत करने का अवसर मिला। अल्लाह तआला की कृपा से हर जगह लोगों ने इस्लामी शिक्षाओं की सुंदरता को स्वीकार किया।

टोरंटो में तीन इनट्रवियू हुए जिनमें एक गलोबल न्यूज़ टोरंटो का था। दूसरा इनट्रवियू सी.बी.सी जो वहाँ का राष्ट्रीय समाचार चैनल है। इसी तरह गलोब एण्ड मैल एक नेशनल अख़बार का इन्ट्रवियू है।

पार्लियामेंट हिल और विभिन्न प्रोग्रामों का विवरण और उन में शामिल होने वाले सम्माननीय मेहमानों की प्रति क्रियाओं का ईमान वर्धक वर्णन। कैनाडा के दौरे के दौरान जो समग्र मीडिया कवरेज हुई है उसमें 32 टीवी चैनलों ने पांच भाषाओं में समाचार प्रसारित किए जिनके द्वारा चालीस लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। रेडियो द्वारा समग्र छह भाषाओं में विभिन्न रेडियो केंद्रों पर तीस समाचार प्रसारित हुए और उनके द्वारा 8 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। समाचार पत्रों द्वारा समग्र 227 अख़बारों में बारह विभिन्न भाषाओं में समाचार और इनट्रवियू प्रकाशित हुए जिनके माध्यम से 4.8 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। सोशल मीडिया जो दूसरा मीडिया है इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि द्वारा 14.6 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। इस तरह कुल मिलाकर वहां लोगों का अनुमान है कि सभी स्रोतों को अगर मिला लिए जाए तो 60 लाख से अधिक लोगों तक संदेश पहुंचा है। अल्हम्दो लिल्लाह।

अल्लाह तआला का फज़्ल है इस फज़्ल की हमें कदर भी करनी चाहिए और इसे संभालना भी चाहिए और विशेष रूप से कनाडा के अहमदियों को इस तरफ ध्यान देना चाहिए ताकि अल्लाह तआला का फज़्ल अधिक बढ़े। हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारे हर काम में अहमदियत और वास्तविक इस्लाम का संदेश पहुंचाने की नीयत होनी चाहिए। तौहीद को दुनिया में स्थापित करने के इरादे होने चाहिए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे को दुनिया में फहराने की नीयत होनी चाहिए। अगर यह होगा तो अल्लाह तआला हमारे कामों में बरकत भी प्रदान फरमाएगा।

अब मैं पीस विलेज (Peace Village) वाले और अबोर्ड ऑफ पीस (Abode of Peace) के रहने वाले जो अधिकांश अहमदी आबादी है वहाँ की अहमदी आबादी लगभग नब्बे प्रतिशत शायद ही हों उन अहमदियों को भी मैं कहता हूं कि अपना अहमदी वातावरण वहाँ पैदा करें और स्थापित करें और अधिक से अधिक कोशिश करें कि सही इस्लाम का नमूना आप स्थापित करने वाले हों और ख़िलाफत के साथ जिस तरह प्यार और ईमानदारी व्यक्त वहाँ करते रहे मेरी उपस्थिति में बाद में भी वृद्धि करने वाले हों और बढ़ते चले जाएं और अपने मूल लक्ष्य को न भूलें कि हम अल्लाह तआला से संबंध बनाना है और उसकी इबादत में हमें कभी सुस्त नहीं होना चाहिए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 18 नवम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

जैसा कि सभी जानते हैं पिछले दिनों मैं कनाडा के दौरे पर था लगभग छह सप्ताह का कार्यक्रम था। अल्लाह तआला की कृपा से यह दौरा हर लिहाज़ से, जमाअत के कार्यक्रमों के लिहाज़ से भी और दूसरों के साथ कार्यक्रमों के मामले में भी मुबारक रहा। कनाडा के जलसा सालाना के बाद वहाँ के जलसा के संबंध में लोगों की प्रतिक्रियाएं और प्रशासनिक बातें और अल्लाह तआला के फज़्लों पर शुक्र का उल्लेख तो मैंने वहीं जलसे से अगले ख़ुत्बा में किया था। आज जो बाकी व्यस्तता और कार्यक्रम रहे उनका कुछ उल्लेख करूंगा।

अल्लाह तआला की कृपा से कनाडा की जमाअत भी दुनिया के कई अन्य जमाअतों की तरह ईमानदारी और वफा में आगे कदम बढ़ाने वाली जमाअतों में से है। अल्लाह तआला की कृपा से युवा लड़के भी और लड़कियां भी जमाअत के कार्यों के लिए आगे बढ़ने की भावना लिए हुए हैं। विशेष रूप से प्रैस और मीडिया के हवाले से युवाओं ने बहुत काम किया है। व्यापक परिचय की कोशिश की है और अल्लाह तआला ने उनकी इन कोशिशों को फल भी लगाया। राजनेताओं और सरकारी अधिकारियों से तो पहले भी वहां परिचय था और अच्छे संबंध थे उनमें भी उन्होंने वृद्धि की लेकिन इस बार मीडिया से संबंध में स्पष्ट अंतर नज़र आया। लेकिन असल बात यह है कि यह विशेष रूप से अल्लाह तआला का फज़्ल हुआ है। उन लोगों ने तो उंगली लगाई थी और अल्लाह तआला ने इसमें अपार बरकत डाल दी बल्कि ये काम करने वाले लड़के ख़ुद स्वीकार करते हैं कि हमारी उम्मीदों से बहुत बढ़कर हमें प्रतिक्रियाएं मिली हैं। या तो यह कोशिश होती थी कि प्रैस में कोई खबर आ जाए कोई ज़िक्र आ जाए, ताकि जमाअत की शुरूआत भी हो इस्लाम का परिचय भी हो लेकिन प्रैस और मीडिया बड़े नख़रे करता था या इस बार यह हालत थी कि मीडिया वाले पीछे फिरते थे कि हमें समय दो। हम ने इमाम जमाअत

अहमदिया से इंटरव्यू लेना है उनसे बात करनी है लेकिन समय की कमी के कारण मजबूरी थी इसलिए जितना हो सका मीडिया के साथ संपर्क या इनट्रव्यू इतना ही हो सका बाक़ियों से माफी चाहनी पड़ी। अब हमारी वहाँ जो मीडिया टीम है उन्हें भी चाहिए कि उन लोगों से जिनसे माफी मांगी गई थी उनसे संबंध भी रखें और मिलकर भी क्षमा करें या लिखित क्षमा करें। यह अगले संपर्कों के लिए आवश्यक चीज़ है।

बहरहाल मैं सारांक्ष में कुछ प्रतिक्रियाएं कुछ फंगशनज़ की प्रस्तुत करता हूँ।

अल्लाह तआला की कृपा से वहाँ तीन नई मस्जिदें बनाई हैं लेकिन दो का ऐसा फंगशन था जिस में दूसरों को बुलाया गया था। संसद में भी एक फंगशन हुआ। York विश्वविद्यालय में भी संबोधन किया। टोरंटो में शांन्ति संगोष्ठी हुई। कैलगरी में शान्ति संगोष्ठी हुई जिसमें दूसरों के सामने इस्लामी शिक्षाओं को प्रस्तुत करने का अवसर मिला। अल्लाह तआला की कृपा से हर जगह लोगों ने इस्लामी शिक्षाओं की सुंदरता को स्वीकार किया।

पहले मैं टोरंटो में मीडिया कवरेज का उल्लेख कर देता हूँ।

टोरंटो में तीन इंटरव्यू के अलावा जो विशेष व्यस्तता थी विश्वविद्यालय का सम्बोधन है। इस का उल्लेख तो आगे आ जाएगा। जो तीन इंटरव्यू हुए इन में गलोबल न्यूज़ टोरंटो था। यह कनाडा का एक प्रसिद्ध न्यूज़ नेटवर्क है और यह इंटरव्यू प्रसारित किया गया और लगभग तीन लाख लोगों ने देखा और जब तक यह रिपोर्ट आई एक लाख लोग इसे ऑनलाइन भी देख चुके हैं।

इसी तरह दूसरा इंटरव्यू सी.बी.सी जो वहाँ का राष्ट्रीय समाचार चैनल है इसका एक बहुत प्रसिद्ध जर्नलिस्ट चीफ कारसपानडिंट पीटर्सबर्ग मैन बर्ग हैं। उन्होंने इंटरव्यू लिया। लिया तो यह पहले गया था लेकिन दो सप्ताह बाद उन्होंने अपने कार्यक्रम में दिया और लगभग आधे घंटे का यह कार्यक्रम था जो नेशनल टेलीविज़न पर दिखाया गया। जैसा कि मैंने कहा कि यह वहाँ सबसे वरिष्ठ पत्रकार हैं और बड़े महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। इस्लाम के बारे में दुनिया के हालात के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत के बारे में और आजकल जो चरमपंथियों ने इस्लाम को बदनाम किया हुआ है इस के बारे में बहुत सारी बातें हुई जिसका कुछ हिस्सा उन्होंने दिया और कुछ नहीं। लेकिन बहरहाल एक अच्छी कवरेज हो गई थी।

इसी तरह ग्लोब एंड मेल एक राष्ट्रीय अख़बार है यह जो पहले मैंने इंटरव्यू का उल्लेख किया है जो सी.बी.सी था इससे उनके का अन्दाज़ा है कि दस लाख कनाडाई लोगों तक संदेश पहुंचा और फिर अख़बार के माध्यम से जो बड़े विस्तृत समाचार प्रकाशित हुए और यू ट्यूब चैनल पर भी आया उसके द्वारा भी एक लाख लोगों तक खबर पहुंची। फिर विश्वविद्यालय में व्याख्यान था। लेक्चर के हवाले से अख़बारों और पत्रिकाओं ने ख़बर दी। इस की कवरेज भी लगभग पांच लाख लोगों तक हुई।

अब मैं अगले कार्यक्रम का उल्लेख करता हूँ। जलसा के बाद पहला कार्यक्रम ओटावा में हुआ जो उनकी राजधानी है। वहाँ संसद में लगभग सारा दिन कार्यक्रम रहा। व्यवस्तताएं रहीं। लोगों से मिलना जुलना रहा। प्रधानमंत्री से अलग मुलाकात भी हुई फिर उनके कुछ मंत्रियों के साथ बड़े अच्छे माहौल में बैठ कर मुलाकात हुई और उनका जो सहयोग हमेशा जमाअत के साथ रहा है उसका शुक्रिया भी मैंने किया।

फिर वहाँ संसद भवन के एक हॉल में जो समारोह था वहाँ कनाडा सरकार के छह मंत्री शामिल हुए, 57 नेशनल सांसद शामिल हुए 11 विभिन्न देशों के राजदूत शामिल हुए और अमेरिका की एंबेसी के प्रथम सचिव और लीबिया की एंबेसी के प्रतिनिधि शामिल हुए। प्रांत ओंटारियो के मंत्री भी मौजूद थे। 30 से अधिक प्रमुख व्यक्ति कार्यक्रम में शामिल हुए जिसमें चीफ ऑफ स्टाफ और मिनसटरीज़ शामिल हुए। फिर evangelical fellowship के निदेशक थे। कनाडा रेड क्रॉस के मुख्य संचार अधिकारी शामिल थे। आर.सी.एम.पी के सहायक आयुक्त थे। विश्वविद्यालय ओटावा और कार्लटन विश्वविद्यालय carleton university के प्रोफेसर थे। कुछ dean और उप प्रीज़ीडिंट भी। कनाडाई काउंसिल फॉर मुस्लिम के निदेशक शामिल थे। यू.एस सरकार के प्रतिनिधियों और कुछ think tank के सदस्य शामिल थे। मानो वहाँ उन लोगों की बड़ी अच्छी gathering थी जो ख़ुद को दुनिया के मामलों को चलाने वाला समझते हैं। वहां इस्लाम की शिक्षा के प्रकाश में वर्णन करने का मौका मिला और इसी तरह जो उनका चरित्र और ये लोग विपरीत व्यवहार दिखाते हैं इस को भी मैंने स्पष्ट किया कि केवल मुसलमानों पर आरोप न दो, बल्कि तुम्हारे अपने जो काम हैं उनकी ओर भी देखो और तुम लोगों के कारण से कई बार दुनिया में उपद्रव पैदा हुए हैं।

बहरहाल इसके बाद जो प्रतिक्रियाएं थीं वे मैं प्रस्तुत करता हूँ।

सांसद जूडी सीगरो हैं उन्होंने ने कहा कि इमाम जमाअत का यह ख़िताब उन नसीहतों से भरा हुआ था कि हम कैसे तीसरे विश्व युद्ध से बच सकते हैं। यह बिलकुल स्पष्ट था कि हमें इस आपदा से बचने के लिए एक दूसरे से सहयोग और मेहनत की ज़रूरत है। यह कहती हैं कि यह संदेश जो इस समय दिया गया यह सारी दुनिया तक पहुंचाने की ज़रूरत है।

फिर एक सांसद केविन वा (Kevin Waug) हैं उन्होंने कहा कि कम शब्दों में कई शीर्षकों पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से इस बात से प्रभावित हूँ कि इमाम जमाअत ने अपने संबोधन में क़ुरआन के कई संदर्भ दिए। यह बात विशेष रूप से मेरे जैसे व्यक्ति के लिए जिस का धार्मिक ज्ञान बहुत कम है बहुत ख़ुश करने वाली थी। इससे मेरे ज्ञान में भी वृद्धि हुई।

प्रत्येक ने अपनी अपनी सोच के अनुसार बीच में से बिन्दु निकाले और टिप्पणियां भी कीं।

इसी तरह इस्राईल के राजदूत भी वहां मौजूद थे। यह कहते हैं कि शांति के लिए महत्त्वपूर्ण संदेश था और सभी धर्मों को कैसे एक दूसरे की इज्ज़त करनी चाहिए। कहते हैं कि आज इस्लाम के बारे में मेरी सोच बदल गई है और उसकी सराहना भी बढ़ गई है। इस तक़रीर को प्रकाशित करना चाहिए और अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना चाहिए और अगर लोग इस संदेश का पालन करें तो दुनिया की गंभीर से गंभीर समस्या भी हल हो सकती हैं। मुझे इस तक़रीर में सहन का पहलू बहुत पसंद आया और कहा कि सभी लोगों के अधिकार अदा किए जाने चाहिए चाहे मुसलमान हों या यहूदी हूँ सभी के अधिकार अदा होने चाहिए।

फिर वरिष्ठ आव्रजन जज और इस साल जो वहाँ सर ज़फरुल्लाह ख़ान पुरस्कार दिया जाता है उसे पाने वाली लुइस आर्बर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बहुत साफ ज़बान में इमाम जमाअत ने हमारी कमियों और कमज़ोरियों की ओर ध्यान दिलाया और साथ ही पश्चिमी समाज की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला और कहा कि कई बार उनके कामों में पाखंड दिखता है और अल्पसंख्यकों के अधिकारों को अदा नहीं करते।

फिर सांसद राज सैनी ने कहा कि इस्लाम के बारे में बताया कि शांतिपूर्ण धर्म है और जो मुसलमान इस शांति के संदेश का पालन नहीं करते वे सच्चे मुसलमान नहीं।

इस तरह के एक संसद सदस्य माजिद जवाहरी हैं शायद किसी अरब देश के हैं। यह कहते हैं कि दुनिया में शांति कैसे हो सकती है? यह एक बहुत बड़ी चुनौती है और इसे हम ने मिलकर हल करना है। और भी कई चुनौतियां हैं जैसे आर्थिक संकट आतंकवाद। इन सबके लिए हमें कड़ी मेहनत और काम करने की ज़रूरत है।

क्रिस्टी डंकन साहिबा सांसद हैं और विज्ञान मंत्री भी हैं। यह कहती हैं एक बात जो विशेष रूप से मेरे दिल को लगी वह यह (उनसे वैसे भी बातें होती रही थीं निजी टिप्पणी उन्होंने की) कि एक बार जो दोस्त बन जाए वह हमेशा के लिए दोस्त हो जाता है। तक़रीर में कई पहलू बयान किए जैसे न्याय, शांति, युवा, संयुक्त राष्ट्र और हम सब को मिलकर मानवता की बेहतरी के लिए कोशिश करनी है। कहती हैं कि अहमदिया जमाअत मेरे लिए एक दयालु परिवार की तरह है।

इसी तरह सांसद निकोला डी आवरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बड़ी अच्छी तक़रीर थी जिस में सभी सांसारिक समस्याओं को संक्षेप के साथ प्रस्तुत किया। आप ने धर्म की पृष्ठभूमि में दुनिया की समस्याओं पर प्रकाश भी डाला। जमाअत अहमदिया एक ज़बरदस्त जमाअत है और धार्मिक संगठनों के लिए एक उदाहरण है। हमें इस तरह आकर्षित किया कि धार्मिक मामलों में सहन होना चाहिए और यह कि आक्रामकता का परिणाम अधिक आक्रामकता ही होता है अगर हम सहन जैसे एक गुण को ही ले लें तो हम एक बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। कहते हैं कि मुझे लगता था कि इमाम जमाअत अहमदिया यहाँ आएंगे और औपचारिक प्रकार की बातें करके कुछ शब्द धन्यवाद के अदा करके बैठ जाएंगे लेकिन जो संबोधन हुआ तो कहते हैं कि शायद ही मैंने इससे बेहतर कोई ख़िताब सुना हो। उन्होंने सभी मुद्दों पर जिनका सामना दुनिया को है प्रकाश डाला। जैसे जलवायु परिवर्तन,आर्थिक समस्याएं, गृहयुद्ध, अन्याय का मुख्य कारण भी वर्णन किया। समकालीन समाधान भी बयान किए और यह भी कहा कि धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। यह भी कहा कि हथियारों की ख़रीद-फरोख्त नहीं होनी चाहिए जो पश्चिमी देश करते हैं। कहते हैं मुझे इस कार्यक्रम में शामिल होकर बेहद ख़ुशी हुई कि कैसे शांति पर बात

करने वाले को सुना। कहते हैं इस दुनिया को जिस तरह इस्लाम से परिचित करा रहे हैं और यही मूल तरीका है।

जर्मन राजदूत वर्नर वेंट ने कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया ने भविष्य की तस्वीर खींची है हम सब भी ऐसा ही शांतिपूर्ण भविष्य चाहते हैं उनके ख़िताब से हमें पता चला कि इस्लाम शांतिपूर्ण धर्म है और हम सब यूरोप में आने वालों के साथ रह सकते हैं। इस तक़रीर का सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश यह था कि हमें दुनिया की बेहतरी के लिए कोशिश करनी होगी और इस बात को सुनिश्चित करना होगा कि साधारण जनता को व्यक्तिगत रूप से अपना जीवन बिताने की अनुमति हो।

यह भी मैंने कहा था कि सरकारों को धर्म के मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और भी कुछ मस्ले हैं हिजाब या मस्जिदें हैं तो इस प्रकार की चीज़ों के बारे में यूरोप में सवाल उठते रहते हैं ये ऐसे सवाल हैं जो फित्ना पैदा करेंगे।

इसी तरह एक प्रमुख इमाम और विद्वान मुहम्मद जब्बार जो शायद किसी अरब देश से हैं। वहाँ एक मस्जिद के इमाम हैं वह कहते हैं कि मैं एक सुन्नी इमाम हूँ और मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि इस तक़रीर ने दुनिया में शांति की बुनियाद रखी है। इस तक़रीर की आज दुनिया को सख्त ज़रूरत है। इमाम जमाअत की तक़रीर ज्ञान पर आधारित थी क्योंकि आपने किसी एक पक्ष पर आरोप नहीं लगाया बल्कि यह कहा कि दुनिया की बैचेनी सभी समूहों की कमज़ोरियों की वजह से है हमें अपनी कमज़ोरियों और कमियों को स्वीकार करना चाहिए और फिर सुधार की ओर कदम उठाना चाहिए। इसमें आप ने इस इस्लामी शिक्षा की ओर ध्यान दिलाया कि कोई इंसान ग़लतियों से मुक्त नहीं है। कहते हैं बड़ा अच्छा ख़िताब था और वे सभी विषय बयान हुए जिनकी ज़रूरत थी और कानून बनाने वाले लोगों को वैकल्पिक समाधान भी बताए। फिर कहते हैं कि इस्लामी विचारधारा को बहुत सुंदर रंग में पेश किया और बहुत कठिन पहलुओं को इस सुंदर अंदाज़ में बयान किया कि लोगों की भावनाओं को भी ठेस न पहुंचे।

फिर एक मेहमान गारनेट जीन्स कहते हैं कि संदेश बहुत अच्छा था। कैसे धर्म और धार्मिक नेता समाज में शांति और समकालीन समस्याओं को हल कर सकते हैं। यह बात भी उजागर की कि कैसे हथियार ख़रीदने और बेचने को नियंत्रित करके हम एक दूसरे के साथ शांति से रह सकते हैं। कहते हैं कि आमतौर पर हम एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करते रहते हैं लेकिन इमाम जमाअत ने बताया कि किस तरह पश्चिम और अन्य देश अपना अपना योगदान करते हुए दुनिया की स्थिति में सुधार कर सकते हैं।

एक सिख मेहमान ने कहा कि एक पश्चिमी संसद में आकर दुनिया की बैचेनी में पश्चिमी देशों का भी हाथ है। जैसे उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि जो हथियार पश्चिमी देश बेचते हैं वह आतंकवादियों के हाथ में कैसे पहुंच जाता है। इस बात को भी स्पष्ट किया कि जो कैनेडियन लोग आतंकवाद के लिए जाते हैं उनमें से बीस प्रतिशत महिलाएं होती हैं और वे आने वाली पीढ़ियों को भी इस रंग में रंगीन कर देंगी। कहते हैं कि मैंने इस बारे में कभी नहीं सोचा था। कहते हैं यह बात भी मुझे अच्छी लगी कि उन्होंने कुरआन से हवाले से भी बात की कि हमें अपने वादे और अमानतें पूरा करने की ज़रूरत है और बड़े सुंदर ढंग से यह कहा कि सरकार भी एक अमानत है और सरकारी पदाधिकारियों को अपने उन पदों को यथा सम्भव पूरा करना चाहिए। फिर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि इमाम जमाअत ने यह भी कहा कि मुस्लिम उलमा ने जनता को गुमराह किया है और इसलिए दंगों में वृद्धि हो रही है। पश्चिमी देशों को भी चुनौती दी कि वह इस बात के दावेदार है कि स्वतंत्रता विवेक और स्वतंत्र अधिकारों को स्थापित करते हैं इसलिए अब उनकी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने इन दावों पर अनुकरण करके दिखाएं और धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करें जैसे हिजाब पर प्रतिबंध या इबादत गाहों पर प्रतिबंध। कहते हैं बड़े उत्कृष्ट रूप से पश्चिम को ध्यान दिलाया।

ये कुछ उदाहरण मैंने दिए हैं असंख्य ऐसी टिप्पणियां मिनसटरों की भी और दूसरों के भी थी।

इसी प्रकार संसद हिल में जो फंगशन था इस की जो मीडिया कवरेज हुई। एक तो पहले ही प्रधानमंत्री साहिब ने अपने ट्वीट पर लिखा कि मुझे आज ओटावा में जमाअत अहमदिया के ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद से मिलकर ख़ुशी हुई और उन्होंने साथ फोटो भी दी और फिर यह ट्वीट चलती रही। इसी तरह इस सारे फनगशन ख़बर की अख़बारों के माध्यम से यह ख़बर विभिन्न माध्यमों से लगभग साढ़े चार लाख लोगों तक पहुंची है।

इसी तरह टोरंटो में एवाने ताहिर में एक पीस संगोष्ठी था जिसमें 614 ग़ैर जमाअत और ग़ैर मुस्लिम मेहमान शामिल हुए जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के मेयर पार्षद अख़बार के पत्रकार डॉक्टर, प्रोफेसर टीचर वकील और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित लोग शामिल थे।

presbyterian church के पादरी कहते हैं पीस संगोष्ठी सुन कर आज इमाम जमाअत की बात से मुझ पर बड़ा असर हुआ क्योंकि यह संदेश शांति प्यार और आशा का संदेश था जिसका रंग तथा नस्ल, पूर्व और पश्चिम या किसी विशेष समय या स्थान से सम्बन्ध नहीं बल्कि सारी दुनिया के लिए था। इस ख़िताब का महत्त्व यह है कि दुनिया में बहुत सी भ्रांतियां और आतंक फैला है लेकिन आज के संदेश में यह बात स्पष्ट थी कि हमारे मध्य साझी बातें अधिक और मतभेद की बातें कम हैं। यह एक बहुत बड़ी ख़ुशखबरी है जिसे लोगों को सुनने की ज़रूरत है।

एक मेहमान ग्रेग कैनेडी जिनकी बहन ने वर्तमान में इस्लाम स्वीकार किया है कहते हैं कि मैं आज अपनी बहन के साथ आया हूँ क्योंकि उसने कुछ दिन पहले इस्लाम स्वीकार किया है और हम देखना चाहते थे कि जमाअत अहमदिया की क्या शिक्षाएं हैं और इमाम जमाअत का संदेश सुनकर मेरी ख़ुशी का अन्त न रहा कि मेरी बहन इतने प्यारे और साथ देने वाले और लोगों की सेवा करने वाले लोगों में शामिल हुई है जो बातें मैंने आज सीखी हैं उनसे बहुत ख़ुश हूँ। इस पीस संगोष्ठी में भी मैंने शांति के साथ जमाअत की दुनिया में जो सेवाए हैं उनका उल्लेख किया था ।

इसी तरह यह एक मुहम्मद अलहलावाजी (Muhammad al Halawaji) साहिब जो संसद में थे नाइल एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं। कहते हैं कि आज का संदेश बहुत स्पष्ट था कि हम सभी को प्यार के साथ रहना चाहिए और हमें किसी से नफरत नहीं है। अगर हम एक दूसरे से नफरत करते रहेंगे तो शांति नहीं हो सकती। कहते हैं कि जब मैंने संसद में इमाम जमाअत का ख़िताब सुना तो मुझे यकीन नहीं आ रहा था कि संसद में इस तरीक पर कोई मुस्लिम नेता इस तरह संबोधित कर सकता है। डर की कोई झलक नज़र नहीं आई और बहुत निडर तरीके पर आप ने तक़रीर की और लोगों को विश्वास हो गया कि यही इस्लाम का सही और सच्चा संदेश है। जो युद्ध हो रहे हैं उनके पीछे कुछ लोग हैं जो इस से लाभ उठा रहे हैं और फिर कहते हैं आज की तक़रीर में भी 'मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं के बारे में बात की और यही हमारी रणनीति होनी चाहिए और यही सच है।

फिर ज़म्मीता(Zumita) कमेटी के सदस्य अबू यूसुफ साहिब कहते हैं आज जो मैंने सुना और देखा उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। इमाम जमाअत ने अपने संबोधन में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कई उदाहरण पेश किए और हमें ध्यान दिलाया कि हमें उन पर अनुकरण करने की कोशिश करनी चाहिए। इमाम जमाअत अहमदिया ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श से यह भी साबित किया कि उन्होंने ज़बरदस्ती कभी भी किसी को इस्लाम में प्रवेश नहीं किया और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कैसे सारी मानवता की सेवा की। क़ुरआन के संबंध में भी इस्लामी शिक्षा पर प्रकाश डाला जैसा कि कुरआन में आता है। "ला इकराह फ़िद्दीन।" और कैसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ईसाई यहूदी हिंदू या किसी भी धर्म के मानने वाले को उनके अधिकार दिए और ध्यान दिलाया कि बतौर इंसान हम सब एक हैं।

फिर तीसरा फनगशन यॉर्क विश्वविद्यालय में हुआ और इस यार्क विश्वविद्यालय की गिनती कनाडा के बड़े विश्वविद्यालयों में होती है। इसमें 11 संकाय हैं और इसके मुख्य परिसर में 53000 से अधिक छात्र अध्ययन कर रहे हैं। इस विश्वविद्यालय में शिक्षकों की संख्या 7000 के करीब है। इस विश्वविद्यालय से अब तक तीन लाख के करीब छात्र शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। मैंने चांसलर से पूछा था। उन्होंने कहा कि यह कनाडा का तीसरा विश्वविद्यालय है।

इस समारोह में एक दोस्त केट कूरियर (Cat Courier) साहिब जो विश्वविद्यालय टोरंटो के indigenous एल्डर सदस्य हैं। वह कहते हैं कि आज का दिन एक तोहफा था ऐसी बातें सुनकर बहुत आनंद आया कि हम सब मिलकर विश्व शांति के लिए काम कर रहे हैं। जो पुराने स्थानीय लोग हैं उनके अधिकार भी मारे गए हैं। कम से कम उन का यह विचार है कि हुकूमत को जो हमारे साथ काम करना चाहिए था, उन का वह हक अदा नहीं हो रहा। तो कहते हैं कि जो बात मुझे विशेष रूप से पसंद आई वह यह थी कि इमाम जमाअत अहमदिया ने जो कुछ भी कहा वह दिल की गहराई से कहा। जब कोई सच्चाई की बातें दिल से करता है तो

हमेशा यादगार रहती हैं। वह दुनिया की तरफ से आ कर वही संदेश दे रहे हैं जिसे हम पसंद करते हैं

और फिर इसी तरह एक छात्र शेरिल करेस थीं। यह कहती हैं कि बहुत अच्छा मौका था जिस में हम सभी को इस्लाम के कुछ वास्तविक शिक्षाओं का पता लगा। अब मुझे इस्लाम का कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया है अब मैं सिर्फ कल्पना पर नहीं चल रही बल्कि इमाम जमाअत ने शांति के बारे में बहुत अच्छी बातें की हैं। ये बातें विशेष रूप से प्रशंसा के योग्य हैं कि इमाम जमाअत ने समझाया कि हम में बहुत सारी बातें शिक्षाओं के हवाले से मिलती जुलती हैं और यह मुझे बहुत अच्छा लगा कि हमारा और आपका अर्थात जमाअत के बुनियादी मूल्य एक ही हैं।

एक दूसरे विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के प्रोफेसर ने अपने सारे छात्र वहां लेक्चर सुनने के लिए भेजे हुए थे। एक स्त्री पत्रकार यूसर अलबारानी कहती हैं कि यह बात मुझे बहुत पसंद आई कि इमाम जमाअत ने आपस में सुलह के साथ रहने के बारे में बताया। एक पत्रकार होने के पर में अक्सर शांति और महिलाओं के अधिकारों के बारे में लिखती हूँ लेकिन जब एक धार्मिक नेता इस बारे में बात करे तो वह एक विशेष महत्त्व रखती है। इमाम जमाअत ने बड़ी स्पष्टता से इस्लामी दुनिया की समस्याओं का वर्णन किया कि उनके पीछे दूसरी सरकारों का हाथ है। यह सुनकर बहुत अच्छा लगा कि जब इमाम जमाअत दुनिया के हालात के बारे में पढ़ते हैं तो उन्हें दु:ख होता है।

फिर एक पादरी साहिब कहते हैं कि जो बातें क़ुरआन से पेश कीं वे बहुत आसान भाषा में समझ आ गई और यह बात विशेष रूप से मुझे पसंद आई कि दुनिया में जो विभिन्न युद्ध हो रहे हैं वह किसी विशेष शक्ति की मदद या उसके संरक्षण में हो रहे हैं और अगर बड़ी सरकारें सहायता करना छोड़ दें तो यह सब कुछ खत्म हो सकता है।

फिर हम सिस्काटोन (Saskatchewan) गए थे वहाँ भी कुछ प्रैस कांफ्रेंस हुई। जमाअत के कार्यक्रम भी थे। ग़ैरों के साथ कार्यक्रम तो नहीं था लेकिन वहाँ भी विभिन्न रेडियो और प्रेस के माध्यम से 1.78 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा।

फिर मस्जिद महमूद रजाईना का उद्घाटन था वहां भी जुम्अ: के बाद शाम को मस्जिद के हवाले से एक होटल में रेसेपशन थी दो सौ मेहमान शामिल हुए इसमें सिस्काटोन (Saskatchewan) प्रांत के मुख्यमंत्री, उप मुख्यमंत्री, रजाईना सिटी के मेयर, मिनिस्टर फॉर पब्लिक सुरक्षा, विपक्ष के उप हाउस नेता, निकट के शहरों के मौजूदा और भूतपूर्व मेयर, विश्वविद्यालय सिस्काटोन के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय रजाईना के रिलेजस स्टडीज विभाग के प्रमुख, प्रोफेसर, पादरी, पुलिस प्रमुख और अन्य विभागों से संबंधित मेहमान शामिल हुए थे।

तुलनात्मक धर्म के एक प्रोफेसर साहिब रजाईना मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर तकरीर सुनने के बाद कहते हैं कि बहुत ज्ञान वर्धक और आकर्षक ख़िताब था उन सभी तक़रीरों में से प्रमुख था जो मैंने धर्मों के प्रोफेसर के रूप से सुने हैं। इमाम जमाअत की जो बात मुझे बहुत अच्छी लगी वह आप का स्पष्ट और व्यावहारिक संदेश था कि अगर दुनिया में सब शांति चाहते हैं तो यह उन गरीबों की अनदेखी करके नहीं मिल सकता जो पीड़ा से पीड़ित हैं। मेरे विचार में यह संदेश बहुत स्पष्ट था। फिर कहते हैं कि मेरे विचार में मौजूदा हालात के मद्देनजर जबकि दुनिया की समस्याओं के इस्लामी समाधान पर लोग कुछ ग़लतफहमी में उलझे हुए हैं उनका संदेश बहुत महत्त्वपूर्ण है अर्थात जो मैंने कहा। कहते हैं कि उन्होंने इन चिंताओं को दूर करने का ज़िम्मा लिया और उनका संदेश हमारे इस बहु सांस्कृतिक और बहु रिलेजस सोसायटी में बहुत सहयोगी सहमति और सम्मान बढ़ावा देने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था।

फिर लेटो विधान सभा सस्काटोन (Saskatchewan) के सदस्य पॉल मेरी मैन हैं। वह कहते हैं कि राजनीतिक और सांसारिक फंगशनज़ भिन्न होते हैं। वहां पर लोग जोर लगाकर अपने विचारों को प्रकट करते हैं और लोगों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं लेकिन इमाम जमाअत अहमदिया में कोई ऐसी बात नज़र नहीं आई। मुझे लगा कि वह बहुत ही प्यार से अपनी ओर बुला रहे हैं और सबसे प्यार करने के लिए तैयार है और मेहनती हैं। मैं समझता हूँ कि धर्म और आध्यात्मिकता वास्तव में इसी बात का नाम है अर्थात अपने पड़ोसियों से प्यार करना और दूसरों की मदद करना। पड़ोसियों से व्यवहार की जो इस्लामी शिक्षा है उसका भी मैंने वहाँ उल्लेख किया था इन का इस की तरफ इशारा है। फिर कहते हैं कि महत्त्वपूर्ण है कि जमाअत एक ऐसी मस्जिद बनाए जो इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को फैलाने वाली हो क्योंकि सस्काटोन (Saskatchewan) के सभी लोग विभिन्न धर्मों से संबंधित हैं और सभी को एक दूसरे से सम्मान और सहिष्णुता का व्यवहार अपनाना चाहिए।

फिर सिस्काटोन (Saskatchewan) के नेता प्रतिपक्ष Trent Wotherspoon कहते हैं कि आज एक सुंदर जलसा था। इमाम जमाअत अहमदिया का संदेश शक्तिशाली और आवश्यक संदेश था जिसने हमारे धर्मों में थोड़ा साझी बातों की पहचान की। हमें बताया कि कनाडा के अहमदी मानवता को प्राथमिकता देने की आस्था को प्राथमिकता देते हैं। इमाम जमाअत अहमदिया का संदेश है कि हम दूसरों के लिए वही पसंद करें जो हम अपने लिए पसंद करते हैं हम सभी के लिए महत्त्वपूर्ण है। फिर यह कहते हैं कि संदेश यह था कि आपसी सहिष्णुता और शांति स्थापित हो। इमाम जमाअत ने इन मूल्यों की पहचान की जिस पर हम सब को चलने की कोशिश करनी चाहिए। यह मूल्य न केवल हमारे शहर रजाईना या हमारे प्रांत सस्काटोन (Saskatchewan) को मज़बूत करने के लिए बल्कि हमारे देश और हमारी दुनिया को मज़बूत करने के लिए हैं।

फिर रजाईना में रजाइना की मस्जिद के रेसपशन के उद्घाटन के बाद जो मीडिया कवरेज हुई, इस में विभिन्न टीवी और अख़बारों के साथ प्रैस कांफ्रेंस भी हुई और व्यक्तिगत इंटरव्यू भी हुए और टीवी रेडियो समाचार पत्रों और मीडिया के लगभग छह सात लोग थे। इस तरह रजाइना की इस मस्जिद के उद्घाटन के कारण और प्रेस सम्मेलन के परिणाम में जो खबरें आईं। इस से लगभग 1.97 लाख लोगों तक इस्लाम का संदेश पहुंचा।

इसी तरह वहां रजाइना के बाद लॉयड मिनिस्टर "मस्जिद बैयतुल अमान" का उद्घाटन हुआ। वह छोटी सी जगह है और अधिकतर तेल का कारोबार करने वाले लोग वहाँ जाते हैं। 49 ग़ैर जमाअत मेहमानों ने भाग लिया में जो सस्काटोन (Saskatchewan) विधान सभा legislative assembly के सदस्य और पूर्व सांसद, नए चयनित मेयर आसपास के इलाकों के मेयर उप मेयर पार्षद प्रोफेसरों, टीचर्स, पत्रकार और अन्य विभागों से संबंधित लोग शामिल थे।

पूर्व मंत्री आप्रवास और डिफेंस Jason Kenney उनके हमारे साथ जमाअत से और मुझ से भी व्यक्तिगत रूप से पुराने संबंध हैं। वह भी वहाँ आए थे और कहते हैं कि जमाअत अहमदिया एक छोटी जमाअत है लेकिन बहुत बढ़-चढ़कर काम करती है और इस्लाम का चमकदार चेहरा दुनिया के सामने पेश कर रही है। इस समय जो दुनिया के हालात हैं और उग्रवाद के बारे में ग़लत फहमी है कि इस्लाम उग्रवाद की अनुमति देता है ऐसे में जमाअत अहमदिया एक दवा की हालत रखती है। यह वह इस्लाम है जो कनाडा की संस्कृति के अनुसार है और शांति का उत्तरदायी है और कहते हैं मुझे लगता मस्जिद का उद्घाटन और इमाम जमाअत अहमदिया का दौरा इस पूरे क्षेत्र के लिए ज्ञान बढ़ाने वाला होगा और लोगों के सामने इस्लाम का सुंदर चेहरा पेश किया जाएगा। फिर कहते हैं कि आज की तक़रीर में इमाम जमाअत अहमदिया ने इन सभी नकारात्मक विचारों का जवाब दिया जो लोगों के दिलों में इस्लाम और मस्जिद के बारे में आ सकते हैं। मस्जिद का उद्घाटन एक बहुत सकारात्मक कदम है और हमारी धार्मिक स्वतंत्रता के मूल्यों के अनुरुप है।

मैंने यह बताया कि उनका संबंध है। लाहौर में जो दारुल जिकर और मॉडल टाउन की शहादतें हुई थीं। उस समय यह मिनिस्टर थे तब सब से पहले उनका मुझे संवेदना का फोन आया था और इसके बाद उन्होंने यह भी वादा किया कि हम शहीदों की फैमलियों को कनाडा में आबाद करने की कोशिश करेंगे और इस लिहाज़ से उन्होंने वादा भी पूरा कर दिया अल्लाह तआला के फज़ल से सभी शहीदों की लगभग सभी फैमलियां वहाँ जा चुकी हैं।

समारोह में शामिल एक मेहमान जान गोरमले (Jojn Gormley) जो रेडियो पर एक कार्यक्रम के मेज़बान भी हैं कहते हैं कि मस्जिद की भूमिका के बारे में कई महत्त्वपूर्ण बिंदु प्रस्तुत किए हैं। फिर मेरे बारे में बात करते हैं कि उन्होंने कहा कि मस्जिद केवल इबादत के लिए नहीं है बल्कि हयूमेनिटी के जमा होने की भी जगह है और जमाअत अहमदिया इस संबंध में बहुत काम कर रही है। जब भी कोई आतंकवादी घटना होती है तो जमाअत अहमदिया ही पहले आपस के संबंध बढ़ाने और विभिन्न धर्मों को इकट्ठा करने की कोशिश करती है। फिर यह कहते हैं कि हमें यह संदेश भी दिया कि देश प्रेम ईमान का हिस्सा है यह इस्लाम की शिक्षा है। जमाअत अहमदिया के लोग पूरी तरह समाज का हिस्सा हैं और जहां कहीं भी रहते हैं वहां अच्छी तरह लोगों में घुल मिल गए हैं। जहां भी जमाअत के लोग हैं वे वहाँ समुदाय को मज़बूत करने में करने की कोशिश में लगे रहते हैं।

फिर उसके बाद कैलगरी गया। वहां जमाअत भी बड़ी है। बड़ा शहर है और हमारी मस्जिद भी विशाल और सुंदर है। वहाँ 11 नवंबर जुम्अ: के बाद शान्ति

संगोष्ठी थी। इसमें लगभग 644 मेहमानों ने भाग लिया और इस समारोहों में मेहमानों में कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री जो अभी कुछ महीने पहले प्रधानमंत्री से हटे हैं, नए प्रधानमंत्री आए हैं यह भी शामिल हुए। अल्बर्टा के मिनिस्टर फॉर ह्यूमन सर्विसेज शामिल हुए। कैलगरी के पूर्व और वर्तमान मेयर शामिल हुए। पूर्व मंत्री Jason Kenney जिनका पहले उल्लेख हो चुका है वह भी वहां आए। विश्वविद्यालय कैलगरी के डीन और कुलपति भी आए। कुछ क़रीबी क्षेत्रों के मेयर और उप मेयर भी आए। रेड डेयर कॉलेज के राष्ट्रपति legislative assembly के सदस्य और विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित लोग शामिल हुए और 600 से ऊपर की उपस्थिति थी। पढ़े लिखे लोगों की अच्छी gathring थी।

कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री (Stephen Harper) ने यहां अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने इमाम जमाअत अहमदिया को कई स्थानों पर बोलते हुए सुना है और उन्होंने हमेशा इस्लाम की शांति का संदेश दुनिया तक पहुंचाया है और फिर तक़रीर के बाद अपनी टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि आज शाम भी यही किया। यह एक भव्य संदेश है जो उनकी जमाअत के सभी सदस्यों का आइना भी है। फिर कहते हैं कि मेरे विचार में इमाम जमाअत की टिप्पणी को बहुत ही आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हैं और प्रत्येक को उन्हें सुनने की ज़रूरत है क्योंकि आज के दौर में चरमपंथी तत्व इस्लाम को बदनाम करने पर तुले हुए हैं और साधारण लोग यही समझते हैं कि यही वास्तविक इस्लाम है और फिर कहते हैं कि इस्लाम का अर्थ ही शांति है। ख़लीफतुल मसीह ने कहा कि इस्लाम का मतलब ही शांति है। इस्लाम का मतलब अल्लाह तआला और उसकी सृष्टि से प्यार है। फिर कहते हैं कि इमाम जमाअत ने सभी मुद्दों पर और दुनिया के अन्य मुद्दों पर विशेष रूप से मध्य पूर्व के विषय पर बहुत ज्ञान वृधक रौशनी डाली है। फिर यह कहते हैं बहुत ही मुश्किल होता था लेकिन उन्होंने बड़ी समझदारी के साथ इस पर चर्चा की। मैं उन सभी लोगों को इस बात की हिदायत करूंगा कि अगर उन्होंने इमाम जमाअत का ख़िताब नहीं सुना तो वह निश्चित रूप से ज़रूरी इसे सुनें।

इसी तरह नाहीद नीनशी (Naheed Nenshi) साहिब जो कैलगरी की मेयर हैं कहते हैं कि बड़ा अच्छा ख़िताब था। बड़ी हिम्मत के साथ इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा को पेश किया और कहा कि इस्लाम में किसी भी प्रकार के चरमपंथ की गुंजाइश नहीं। मुसलमानों के प्रतिनिधित्व में ऐसी बात सुनने का स्वागत है। यह मेयर आग़ाखानी हैं।

फिर कैलगरी विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर अपनी पत्नी के साथ आए थे कहते हैं कि यह संदेश शांति का संदेश था जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। हम मुख्य रूप से डच हैं और हमारे यहां कहावत है कि un known is Unloved। अर्थात जिस चीज़ का ज्ञान ही नहीं उस से प्यार कैसे हो सकता है। यही हाल इस्लाम का है जब इस्लाम की सच्चाई का पता चलता है तो अच्छा लगने लगता है। हमें आज इमाम जमाअत को सुनने का अवसर मिला है। आज से इस्लाम को हम बेहतर समझेंगे और इस्लाम से पहले से अधिक प्यार करेंगे।

फिर अलबर्टा पार्टी के नेता और कैलगरी Elbew की legislative assembly एल्बे के सदस्य ग्रीन क्लार्क ने कहा कि बड़ा प्रभावित करने वाला संदेश था। समय पर और दुनिया के मौजूदा हालात के अनुरूप था। कैलगरी और कनाडा के लोगों को पता चला है कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है यह बात हमें दूसरों तक भी पहुचानी चाहिए कि इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है और वास्तविकता यही है।

फिर ब्रायन लिटिल शैफ अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करते हैं कि इमाम जमाअत ने शांति की स्थापना पर अपने संबोधन को केंद्रित रखा यह बहुत ही अच्छा अंदाज़ था। इस्लाम के बारे में बहुत कम जानता था। डरता था और मीडिया में नकारात्मक कवरेज के कारण दुविधा का शिकार था। मैं सोचा करता था कि क्या कुरआन वास्तव में उपद्रव की शिक्षा देता है आज अंततः मुझे अपने सवाल का जवाब मिल गया है। इमाम जमाअत ने कुरआन के हवाले पेश किए और साबित किया है कि इस्लाम शांति का धर्म है। पहले जब भी सफर के दौरान किसी मध्य पूर्व से संबंधित व्यक्ति से मिलता तो डरता था कि वह आतंकवादी हमला न कर दे लेकिन मुझे आज पता चला है कि इस्लामी शिक्षा से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। इमाम जमाअत ने जो संदेश दिया है हमें इस संदेश की बहुत जरूरत है क्योंकि दुनिया में बहुत फसाद पैदा हो चुका है और इमाम जमाअत अहमदिया ने सबको बताया कि हमें नफरत का मुकाबला सहानुभूति और प्यार से करना है।

फिर केले (Kelly) साहिबा एक महिला हैं कहती हैं कि मैं सोच भी नहीं सकती थी कि कितने महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में भाग लेने जा रही हूँ। कहती हैं मैं सिर्फ अपने एक दोस्त को ख़ुश करने आई थी जिसने मुझे आमंत्रित किया था कि अवश्य शामिल होना। यह भी बड़ी पढ़ी लिखी महिला हैं। लेकिन मैं बहुत ख़ुश हूँ कि मैं आ गई। मैंने कभी ऐसा कार्यक्रम नहीं देखा जिसमें हर तरफ सकारात्मक सोच और जमाअत अहमदिया के इमाम का संदेश बहुत ही उच्च है। मुझ जैसे कम ज्ञान को भी यह बात अच्छी तरह समझ आ गई कि इस्लाम ऐसा धर्म है कि हर देश जाति और धर्म का स्वागत करता है। इसलिए हमें हरगिज़ इस्लाम से डरने की जरूरत नहीं। ज़रूरत है तो इस बात की कि हम मुसलमानों को बेहतर रूप से जानने की कोशिश करें। फिर कहती हैं कि गैर मुस्लिम विद्वानों के जो अंश पेश किए गए। (यहाँ मैंने कुछ ओरईन टलिसट(Orientlists) स्टेन ले पूल आदि के उद्धरण प्रस्तुत किए थे) जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में थे कि आप ने किस तरह शांति स्थापित की और कैसे उस समय सहन किया था। इस के हवाले से यह बात कर रही हैं कि गैर मुस्लिम विद्वानों के जो हवाले पेश किए गए वह मुझे बहुत अच्छे लगे हैं। कैसे उन्होंने अपना दृष्टिकोण पेश करते हुए इस्लाम के पैग़म्बर को शांतिपूर्ण साबित किया है।

केवल परिचय के कारण से एक फंगशन पर तो ले आए लेकिन अहमदियों को भी चाहिए कि जिनसे परिचय है उन्हें इस्लाम की सुंदर शिक्षा के बारे में भी बताना चाहिए और इसी तरह फिर धीरे धीरे बातों से ही तब्लीग़ के रास्ते खुलते हैं। यह नहीं कि साधारण सांसारिक बातें होती जाएं और इस्लाम के बारे में कुछ पता नहीं है। अब यह पुरानी दोस्त थी जिसे यह विचार तो आया कि अपने दोस्त के लिए फंगशन में शामिल हों लेकिन जो अहमदी दोस्त थी उसने इस्लाम के बारे में कभी नहीं बताया हुआ था। इस बारे में हमारे युवा लड़के लड़कियों को ध्यान देना चाहिए।

कैलगरी पुलिस के एक अधिकारी बाब रिची (Bon Richi) कहते हैं कि बहुत दिलचस्प ख़िताब था। इमाम जमाअत ने बताया कि इस्लाम कैसे बहु संस्कृति वाद को बढ़ावा देता है। कहते हैं हमारे समाज में इस बात की बहुत ज़रूरत है और इमाम जमाअत सभी लोगों को एकजुट कर रहे हैं और अंतर्धार्मिक संवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। इमाम जमाअत की बातें मेरे दिल को जाकर लगी हैं विशेषकर जब उन्होंने विश्व संबंधों के बारे में बात की और बताया कि इन समस्याओं का कैसे समाधान निकल सकता है और उन्होंने कुरआन के हवाले देकर साबित किया कि इस्लाम शांति का धर्म है और मुसलमानों को हर स्थिति में सुलह की ओर हाथ बढ़ाने की शिक्षा दी गई है चाहे दूसरे पक्ष की नीयत ख़राब क्यों न हो।

एक मेहमान अनीला ली यूआन (Anila Lee Yeun) साहिबा कहती हैं कि मुझे बहुत अच्छा लगा कि इमाम जमाअत ने कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पश्चिमी दुनिया को बताया कि उन्हें न्याय करना चाहिए और दुनिया के मुद्दों में अपने चरित्र पर विचार करना चाहिए। इमाम जमाअत ने बिल्कुल सही कहा कि दुनिया की समस्याओं के लिए ज़िम्मेदार किसी एक पक्ष को नहीं ठहराया जा सकता।

कैनेडा की indigenous community जो है वहां के पुराने स्थानीय लोग हैं अपने अपने कबीलों में रहते हैं अक्सर शहरों में भी आते हैं लेकिन बहरहाल ये फर्स्ट नेशन कहलाती है स्थानीय हैं वे कहते हैं एक उनमें एक ली पो शील्ड है। कहते हैं मुझे बहुत अच्छा लगा कि इमाम जमाअत ने बड़ी ईमानदारी और साहस दिखाते हुए इस्लाम पर लगाए जाने आरोप कि इस्लाम आतंकवाद की शिक्षा देता है का मुकाबला किया। मुझे यह भी बहुत अच्छा लगा कि इमाम जमाअत ने इस्लामी शास्त्र कुरआन शरीफ से संदर्भ देकर साबित किया कि ऐसी आपत्तियां ग़लत हैं अर्थात फिर कहते हैं कि इमाम जमाअत ने जिस तरह पश्चिमी देशों को कहा कि वह मध्य पूर्व में हथियार मुहैया कर रहे हैं वह भी बिल्कुल सच है। इमाम जमाअत इस्लामी युद्ध की रणनीति बताते हुए एक वाक्य कहा to stop hand of Apparition कहते हैं यह वाक्यांश मुझे बहुत पसंद आया उसे हमेशा याद रखूँगा यानी इस्लामी युद्ध इसलिए लड़ी गईं to stop hand of Apparition। कहते हैं मैं जानता हूँ कि आप के ख़लीफा अत्याचार और हिंसा का मतलब बड़ी अच्छी तरह समझते हैं इसलिए मुझे लगा कि ख़लीफा हमारी तकलीफ को बड़ी अच्छी तरह समझ सकते हैं। इन विभिन्न क़बीलों के विभिन्न जनजाति हैं उनके भी दस नेता वहां आए थे उनसे भी मुलाकात हुई और यहां भी तब्लीग़ी कार्यक्रम भी बनाएंगे। इंशा अल्लाह तआला रास्ते भी खुलेंगे।

कैलगरी में विभिन्न समाचार चैनल टीवी रेडियो मीडिया के माध्यम से जो कवरेज हुई है इस में आठ दस चैनलों, अख़बारों ने ख़बर दीं और नेशनल लेवल

के भी बड़े अख़बार भी थे। इस तरह कुल मिलाकर कैलगरी में जो इंटरव्यू और प्रेस सम्मेलन आदि हुए हैं उसके द्वारा पांच लाख लोगों तक संदेश पहुंचा है। कैनेडा के दौरे के दौरान जो समग्र मीडिया कवरेज हुई है उसमें 32 टीवी चैनलों ने पांच भाषाओं में समाचार प्रसारित किए जिनके द्वारा 40 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। रेडियो द्वारा समग्र 6 भाषाओं में विभिन्न रेडियो केंद्रों पर 30 समाचार प्रसारित हुए और उनके द्वारा 8 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। समाचार पत्रों द्वारा समग्र 227 अख़बारों में 12 विभिन्न भाषाओं में समाचार और इंटरव्यू प्रकाशित हुए जिनके माध्यम से 4.8 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। सोशल मीडिया जो दूसरा मीडिया है इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि द्वारा 14.6 लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। इस तरह कुल मिलाकर वहां लोगों का अनुमान है कि सभी माध्यमों को अगर मिला लिए जाए तो 60 लाख से अधिक लोगों तक संदेश पहुंचा है। अल्हम्दो लिल्लाह।

अत: यह अल्लाह तआला का फज़ल है। इस फज़ल की हमें कदर भी करनी चाहिए और इसे संभालना भी चाहिए और विशेष रूप से कनाडा के अहमदियों को इस तरफ ध्यान देना चाहिए ताकि अल्लाह तआला का फज़ल अधिक बढ़े। हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारे हर काम में अहमदियत और वास्तविक इस्लाम का संदेश पहुंचाने की नीयत होनी चाहिए। तौहीद को दुनिया में स्थापित करने के इरादे होना चाहिए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे को दुनिया में फहराने की नीयत होनी चाहिए। अगर यह होगा तो अल्लाह तआला हमारे कामों में बरकत भी प्रदान करेगा। अल्लाह तआला हमें उसकी तौफीक़ भी प्रदान करे।

अब मैं पीस विलेज (Peace Village) वाले और अबोर्ड ऑफ पीस (Abode of Peace) के रहने वाले जो अधिकांश अहमदी आबादी है वहाँ की अधिक आबादी अहमदी लगभग नब्बे प्रतिशत शायद ही हों उन अहमदियों को भी मैं कहता हूं कि अपना अहमदी वातावरण वहाँ पैदा करें और स्थापित करें और अधिक से अधिक कोशिश करें कि सही इस्लाम का नमूना आप स्थापित करने वाले हों और ख़िलाफत के साथ जिस तरह प्यार और ईमानदारी वहाँ मेरी उपस्थिति में व्यक्त करते रहे बाद में भी वृद्धि करने वाले हों और बढ़ते चले जाएं और अपने मूल लक्ष्य को न भूलें कि हमें अल्लाह तआला से संबंध बनाना है और उसकी इबादत में हमें कभी सुस्त नहीं होना चाहिए। अल्लाह तआला उन्हें भी आप को भी मुझे भी सब को उसकी तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

वाकफीन नौ और उनके माता पिता के लिए महत्त्वपूर्ण घोषणा

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ ने विभिन्न अवसरों पर वाकफीन नौ को जामिया अहमदिया में प्रवेश लेकर धार्मिक शिक्षा प्राप्त करके जमाअत की सेवा करने की ओर ध्यान दिलाया है। सय्यदना हुज़ूर अनवर का उपदेश है कि:

" अधिक से अधिक बच्चों के दिमाग़ में डालें कि तुम्हारे जीवन का उद्देश्य धर्म का अध्ययन करना है। ये जो वाकफीन नौ बच्चे हैं उनके दिमाग़ों में यह डालने की ज़रूरत है कि धर्म की शिक्षा के लिए जो जमाअत के धार्मिक संस्थाएं हैं उसमें जाना चाहिए। जामिया अहमदिया में जाने वालों की संख्या वाकफीन नौ में काफी अधिक होनी चाहिए।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 18 जनवरी 2013 ई)

इसलिए समस्त वाकफीन नौ का यह कर्तव्य है कि दसवीं कक्षा (10th) तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए दफतर वक्फ नौ भारत से संपर्क करें और नेशनल केरियर पलानिंग वक्फ नौ भारत की अनुमति के साथ विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा प्राप्त करें। इसलिए भारत के समस्त वाकफीन जो इस साल 10th या 2+ या स्नातक के अंतिम वर्ष में विद्यार्थी हैं, वे अपनी भविष्य की शिक्षा के लिए तुरंत दफतर वक्फ नौ भारत (नज़ारत तालीम) से संपर्क करें ताकि वाकफीन की शिक्षा के संबंध में मार्गदर्शन किया जा सके। वाकफीन नौ के लिए शिक्षा के हर चरण में अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

(इंचार्ज वक्फ नौ विभाग भारत)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 12 का शेष

अपने पति के साथ दरवेशी के वादा में शामिल हो गईं। कादियान से बहुत प्यार था और पति की मृत्यु के बाद आप ने 36 साल का लंबा समय सब्र तथा शुक्र के साथ बिताया। अल्लाह तआला की कृपा से बहुत तक्वा वाली और अल्लाह तआला की सृष्टि की सहानुभूति करने वाली बहुत नेक महिला थीं। घर पर आ कर किसी मांगने वाले को कभी खाली हाथ नहीं जाने देती थी। वफात से एक साल पहले तक हर साल रमज़ान के पूरे रोज़े रखा करती थीं और कुरआन शरीफ का दौर कई बार पूरा करती थीं। अपने बच्चों को भी नमाज़ जमाअत के साथ और कुरआन की तिलावत और ख़िलाफत और जमाअत की प्रणाली का पूरा पालन और अनुपालन की हिदायत करती रहीं। अत्यधिक इबादत करने वाली, साबिर शाकिर, अल्लाह तआला पर भरोसा करने का पूर्ण नमूना, साफ बात कहने वाली अपने बच्चों की अच्छी तरबियत करने वाली बड़ी स्वाभिमान बड़ी ग़ैरत वाली और दयालु महिला थीं। कश्फ़ तथा रोया वाली भी थीं। उन्होंने सभी बच्चों के संबंध शुद्ध धार्मिक उद्देश्यों को सामने रखते हुए किए। स्वर्गीया मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में तीन बेटियां और पांच बेटे यादगार छोड़े हैं। तीन बेटे आपके वक्फ ज़िन्दगी मुरब्बी हैं जिनमें से एक पुत्र ताहिर अहमद साहब चीमा जामिया अहमदिया के शिक्षक एक बेटे मुबारक अहमद चीमा साहिब इन्चार्ज दफतर उलिया हैं और इस समय इन्चार्ज शूरा भारत भी हैं। अल्लाह तआला स्वर्गीया के स्तर ऊंचा करे।

तीसरा जनाज़ा ग़ायब आदरणीय राणा मुबारक अहमद साहिब का है जो लाहौर के रहने वाले थे इस के बाद यहां आ गए। 5 नवम्बर 2016 ई को 78 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके पिता राणा मुहम्मद याकूब साहिब मरहूम ने एक ख़वाब के परिणाम में अहमदियत स्वीकार की थी जिसके कारण से परिवार में विरोध हुआ और उन्हें घर बार छोड़ना पड़ा। फिर उसके बाद आप की मां ने भी अहमदियत स्वीकार कर ली। राणा साहिब बचपन से ही जमाअत की सेवाओं में हमेशा अव्वल रहे। शुरुआत से ही ख़िलाफत और जमाअत के साथ ईमानदारी और वफ़ा का सम्बन्ध था। जमाअत की सेवाओं की शुरुआत 1967 ई से हुई जो अंतिम सांस तक जारी रही। आप लाहौर और बहावलपुर में बतौर कायद मज्लिस और सैक्रेटरी माल के अतिरिक्त लंबा समय तीस साल तक सदर जमाअत अल्लामा इकबाल टाउन लाहौर रहे और इसके अतिरिक्त लंबा समय लाहौर ज़िला के सैक्रेटरी माल सैक्रेटरी तहरीक जदीद और सैक्रेटरी वक्फ जदीद के रूप में सेवा की ताकत मिली। रिटायरमेन्ट के बाद उन्होंने अपने आप को वक्फ के लिए पेश किया था तो अल्फज़ल के प्रतिनिधि के रूप में सेवा करते रहे। बहुत नर्म बात करने वाले और दुआ करने वाले चंदों को अदा करने में नियमित, ख़िलाफत से दिली मुहब्बत रखने वाले ईमानदार इंसान थे। अल्फज़ल में लेख भी लिखा करते थे और उनके लेख अच्छे हुआ करते थे। जब तक पाकिस्तान में रहे हैं मुझे नियमित वहां के हालात कोई बीमार हुआ तो इसके बारे में सूचना सब से पहले उन से आया करती थी। प्राय लोगों के लिए दुआओं की तहरीक करते थे। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के अतिरिक्त एक बेटी और तीन बेटे और काफी पोते पोतियां शामिल हैं। सारे यहीं हैं। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे

इसी तरह शहीद मरहूम के भी अल्लाह तआला स्तर ऊंचा करे और उनके बच्चों को अपनी सुरक्षा में रखे अब वे बच्चे सीरिया से कनाडा चले गए हैं। अल्लाह तआला इस माहौल से भी उन्हें बचा के रखे और वे पवित्र उद्देश्य जिनके लिए शहीद ने अहमदियत स्वीकार की थी अल्लाह तआला उनकी नस्लों में भी जारी रखे।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

हमारा काम केवल बौद्धिक रूप से दूसरों को प्रभावित करना नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए हमें क़ुरआन के आदेश का व्यावहारिक उदाहरण अपने कर्म से दिखाने की ज़रूरत है। हमारे पास कोई सरकार नहीं है जहां हम सरकारी स्तर पर उनके आदेश के नमूने स्थापित करके दिखा सकें। जब वह समय इंशा अल्लाह तआला आएगा तो उच्च स्तर पर भी यह नमूने हमें दिखाने होंगे लेकिन इस समय जमाअत और सामाजिक स्तर पर यह नमूने हमें स्थापित करने की ज़रूरत है।

अतः हर अहमदी को और विशेष रूप से यहाँ मैं कहूँगा उहदेदारों को यह देखने की ज़रूरत है कि वे किस हद तक अपनी अमानतों के हक़ अदा करते हुए इंसाफ और निष्पक्षता के इस मानक पर कायम हैं कि उनका हर फैसला जो है वह इंसाफ के उच्च मानकों को प्राप्त करने वाला हो। कुछ उहदेदारों या जिनके पास नियमित पद तो नहीं लेकिन कुछ सेवाएं सौंपी गई हैं उनके बारे में शिकायत लोगों को है कि इंसाफ से काम नहीं लेते।

जनरल सैक्रेटरी और उसके कार्यालय में काम करने वाले हर कार्यकर्ता का काम है कि हर आने वाले के साथ सम्मान और आदर से पेश आए। यह नहीं कि जो पसंदीदा लोग हैं और दोस्त हैं उनके लिए और व्यवहार हों और जो अनजान हैं या जिनके साथ संबंध अच्छे नहीं हैं उनके साथ नकारात्मक व्यवहार हों और इस बात की निगरानी बाकी क्षेत्रों के उहदेदारों को भी करनी चाहिए जिन की भी सार्वजनिक डीलिंग है कि उनके साथ काम करने वाला हर कार्यकर्ता और सहायक इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी करते हुए अपना काम कर रहा है या नहीं।

केवल यह न समझें कि मर्कज़ी उहदेदार सम्बोधित हैं बल्कि सदर साहिबान तथा उन की आमला के मेम्बरान भी शामिल हैं जिन को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि क्या वे इंसाफ के तकाज़े पूरे कर रहे हैं।

जहां ग़लतियां होती हैं वहां ग़लतियों को छुपाने के लिए कमज़ोर बहाने तलाश करने के स्थान पर ग़तल किस्म के बहाने तलाश करने के स्थान पर इस्तग़फार करते हुए अपना सुधार करने की कोशिश करनी चाहिए।

हमारा प्रत्येक उहदेदार विशेष रूप से और हर अहमदी आमतौर पर दुनिया के सामने एक रोल मॉडल होना चाहिए। जहां दुनिया में फ़ित्ने दंगे और अराजकता और अधिकार छीन लेने के नमूने नज़र आते हैं वहाँ जमाअत में इंसाफ और अधिकार के अदा करने के नमूने दिखने चाहिए। प्रत्येक अहमदी को याद रखना चाहिए कि हम ने अपनी बैअत के वादे में सारी प्रकार की बुराइयों से बचने का वादा किया है और वादा पर ध्यान न देना और जानबूझ कर उस पर अनुकरण न करना विश्वासघात है।

इस समय दुनिया में केवल और केवल सिर्फ एक जमाअत है जो जमाअत अहमदिया मुस्लिमा कहलाती है। और यही एक जमाअत है जो दुनिया में एक नाम से पहचानी जाती है और इसके अतिरिक्त और कोई अंतरराष्ट्रीय जमाअत नहीं जो दुनिया में एक नाम से जानी जाती है। इसलिए इसके साथ जुड़े रहना और जमाअत की प्रणाली का हिस्सा बनना आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार वास्तविक मुसलमान बनाता है। इस ख़ुश किस्मती पर हर अहमदी जितना भी धन्यवाद करे कम है और वास्तविक धन्यवाद यही है कि जमाअत की प्रणाली की पूरी इताअत ख़िलाफत का पालन करता हो।

आदरणीय अदनान मुहम्मद कुरदिया आफ सीरिया की शहादत, आदरणीया बुशरा बेगम साहिबा पत्नि आदरणीय मंज़ूर अहमद चीमा साहिब दरवेश कादियान और आदरणीय राना मुबारक अहमद साहिब आफ लाहौर वर्तमान लन्दन का देहान्त, मरहूमीन की नमाज़

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 नवम्बर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْـهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْـدَهٗ لَا شَـرِيكَ لَهٗ وَأَشْـهَدُ أَنَّ مُحَمَّـدًا عَبْـدُهٗ وَ رَسُـوْلُهٗ. أَمَّـا بَعْـدُ فَأَعُـوْذُ بِـاللّٰهِ مِـنَ الشَّـيْطٰنِ الرَّجِيْـمِ. بِسْـمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ - اَلْحَمْـدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِـيْنَ. اَلرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ - مٰلِكِ يَـوْمِ الدِّيْـنِ -اِيَّـاكَ نَعْبُـدُ وَ اِيَّـاكَ نَسْـتَعِيْنُ. اِهْدِنَـا الصِّـرَاطَ الْمُسْـتَقِيْمَ-صِرَاطَ الَّذِيْـنَ اَنْعَمْـتَ عَلَيْـهِمْ - غَيْرِ الْمَغْضُـوْبِ عَلَيْـهِمْ وَلَا الضَّآلِّـيْنَ -

يٰٓاَيُّهَـا الَّذِيْـنَ اٰمَنُـوْا كُوْنُـوْا قَوّٰمِـيْنَ بِالْقِسْـطِ شُـهَدَآءَ لِلّٰهِ وَ لَـوْ عَـلٰٓى اَنْفُسِـكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْـنِ وَ الْاَقْرَبِـيْنَ ۚ اِنْ يَّكُـنْ غَنِيًّـا اَوْ فَقِيْرًا فَـاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَـا ۟ فَلَا تَتَّبِعُـوا الْهَـوٰٓى اَنْ تَعْدِلُـوْا ۚ وَاِنْ تَلْـوٗٓا اَوْ تُعْرِضُـوْا فَـاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَـا تَعْمَلُـوْنَ خَبِـيْرًا

(अन्निसा: 136)

इस आयत का अनुवाद है कि हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह के लिए गवाह बनते हुए इंसाफ को मजबूती से स्थापित करने वाले बन जाओ चाहे ख़ुद अपने ख़िलाफ गवाही देनी पड़े या माता पिता और निकट रिश्तेदारों के ख़िलाफ चाहे कोई अमीर हो या ग़रीब दोनों का अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ संरक्षक है। अतः तू अपनी इच्छाओं का पालन न करो, ऐसा न हो कि इंसाफ से परहेज़ करो और अगर तुम ने गोलमोल बात या आंखें फेर लीं तो निश्चित रूप से अल्लाह तआला जो तुम किया करते हो इससे बहुत जानकार है।

हम दुनिया को कहते हैं कि दुनिया की समस्याओं का समाधान इस्लामी शिक्षा में है इसके लिए हम क़ुरआन की शिक्षा प्रस्तुत करते हैं। मेरे कनाडा के दौरे के दौरान एक पत्रकार ने सवाल किया कि तुम आजकल की समस्याओं का क्या समाधान प्रस्तुत करते हो। मैंने उससे कहा कि तुम दुनिया वाले और दुनिया की बड़ी ताकतें अपने विचार में समस्याओं को हल करने और दुनिया में शांति और चरमपंथ को रोकने के लिए अपने सभी प्रयास कर बैठे हो लेकिन समस्या वहीं की वहीं हैं। एक जगह कुछ कमी होती है तो दूसरी जगह ज्वाला भड़क उठती है वहाँ से दूर करने की कोशिश करते हैं तो पहली जगह फसाद बरपा हो जाता है। सभी सांसारिक कोशिशें तो इन दंगों को समाप्त करने के लिए की जा चुकी हैं उपयोग हो चुकी हैं केवल एक कोशिश अभी नहीं हुई और वह इस्लामी शिक्षा की रोशनी में इसका समाधान है। इस पर चुप तो हो जाते हैं लेकिन हमें यह भी देखना चाहिए कि दुर्भाग्य से मुस्लिम देशों ने भी इस्लाम का नारा तो लगाया लेकिन जो ख़ुदा तआला ने शिक्षा दी है और जो इस्लाम चाहता है और जिसके आदर्श आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्थापित फरमाए उस पर अनुकरण नहीं किया, न करने की कोशिश करते हैं जिसके

नतीजे में सबसे अधिक इस समय दुनिया में दंगे की चपेट में मुस्लिम देश ही हैं। इस से अधिक बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है।

इस समय तक तो किसी पत्रकार ने मुझ से सीधे यह नहीं कहा कि इन आदेशों की अगर कोई व्यावहारिक सच्चाई है तो पहले मुसलमान देश अपना सुधार करें लेकिन उनके मन में यह सवाल उठ सकते हैं और उठते होंगे इसलिए मैं आमतौर पर ग़ैरों के सामने अपने जो भाषण होते हैं उनमें पहले मुसलमानों की स्थिति का उल्लेख कर के फिर उन शक्तियों को उनका अपना चेहरा दिखाता हूँ और पत्रकारों के सामने और विभिन्न साक्षात्कारों में बताता हूँ कि मुसलमानों का उस पर अनुकरण न करना भी इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई की दलील है क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट रूप से फरमा दिया था कि मुसलमानों की यह हालत हो जाएगी कि वह इस्लामी शिक्षा की वास्तविकता को भुला देंगे और अपनी स्वाभाविक इच्छाओं और अपने निजी हित उनकी प्राथमिकता बन जाएंगे।

(उद्धरित अल्जामअ लेशुअबिल ईमान जिल्द 3 पृष्ठ 317-318 हदीस 1763 प्रकाशक मकतब: अर्रशीद बैरूत 2004 ई)

जब ऐसी स्थिति होगी तो उस समय आपका सच्चा ग़ुलाम प्रकट होगा जिसका उल्लेख कुरआन में भी है और जिस के प्रकट होने के समय के लक्षण कुरआन ने भी बयान कर दिए हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी बड़े स्पष्ट रूप से खोलकर बयान कर दिए हैं। इसलिए एक अहमदी मुसलमान के लिए इन परिस्थितियों में परेशान होने के स्थान पर एक मामले में ख़ुशी का स्थान है यह तसल्ली है कि जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों की जो हालत बयान की थी और विशेष रूप से उलेमा की स्थिति की भविष्यवाणी फरमाई थी वह पूरी हुई और हम इसके गवाह बने और यह बात तो अब ग़ैर अहमदी मुसलमान भी कहने लग गए हैं और विशेष रूप से अपने उल्मा के बारे में भी आवाज़ उठाने लगे हैं यद्यपि दबी दबी ज़ुबान में ही यह आवाज़ उठ रही हों, लेकिन हम अहमदी मुसलमान इस लिहाज़ से भी ख़ुश हैं कि हम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के दूसरे भाग को भी पूरा करने वालों में शामिल हैं और अल्लाह तआला के भेजे हुए नबी और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम मसीह मौऊद और महदी मौऊद को मानने वाले भी हैं उनमें शामिल हैं जिसके माध्यम से इस्लाम के पुनर्जागरण का दौर शुरू हुआ है। लेकिन क्या इतनी बात हमें हमारा लक्ष्य प्राप्त करने वाला बना देगी। यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर हम में से हर एक को विचार करना चाहिए।

यह आयत जो मैंने सुनाई है यह आयत में अपने कई भाषणों में जो दूसरों के सामने करता हूँ बयान कर चुका हूँ और उन्हें बताता हूँ कि इस्लाम जब इंसाफ और इंसाफ की स्थापना के बारे में कहता है तो उसके लिए जो मानक स्थापित करता है वह इस आयत में दर्ज हैं और अक्सर लोग इससे बड़े प्रभावित होते हैं अपनी टिप्पणियों में यह उल्लेख भी करते हैं लेकिन हमारा काम केवल बौद्धिक रूप से दूसरों को प्रभावित करना नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए हमें कुरआन के आदेश का व्यावहारिक उदाहरण अपने कर्म से दिखाने की ज़रूरत है। हमारे पास कोई सरकार नहीं है जहां हम सरकारी स्तर पर उनके आदेश के नमूने स्थापित करके दिखा सकें। जब वह समय इंशा अल्लाह तआला आएगा तो उच्च स्तर पर भी यह नमूने हमें दिखाने होंगे लेकिन इस समय जमाअत और सामाजिक स्तर पर यह नमूने हमें स्थापित करने की ज़रूरत है।

दुनिया हम से पूछ सकती है कि ठीक है तुम्हारे पास सरकारी ताकत तो नहीं हैं लेकिन तुम्हारी एक जमाअत की प्रणाली है तुम एक जमाअत हो तुम एक हाथ पर उठने और बैठने का दावा करते हो तुम्हारा एक आर्थिक और सामाजिक मामलों में वास्ता पड़ता है क्या तुम इंसाफ और ईमानदारी के इस मानक पर अपने मामलों को तय करते हो।

अल्लाह तआला ने इस आयत में एक जगह शुरू में "किस्त" शब्द का इस्तेमाल किया है और दूसरी जगह "अदल " का जिस के अर्थ बराबरी, पूर्ण इंसाफ और उच्च नैतिक मानक, किसी भी प्रकार की तरफदारी से पूरी तरह से मुक्त होना और बिना किसी झुकाव और प्रभाव के काम करना। अब हम में से हर एक को देखने की ज़रूरत है कि क्या इन बातों को सामने रखते हुए हम अपने मामलों को तय करते हैं क्या हम यह मानक स्थापित करने के लिए अपने ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैयार हैं क्या हम यह मानक स्थापित करने के लिए अपने माता पिता के ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैयार हैं क्या हम यह मानक स्थापित करने के लिए अपने क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैयार हैं। यहाँ क़रीबी रिश्तेदारों से मतलब सब से पहले तो बच्चे हैं। क्या हम यह मानक स्थापित करने के लिए अपनी इच्छाओं को दबाने का हौसला रखते हैं और व्यावहारिक रूप से साबित करके उसे दिखा भी सकते हैं? ये सब ऐसी बातें हैं जो मामूली बात नहीं इस समय आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने यह नमूना स्थापित करके हमें दिखाए। अत: एक घटना आती है। आप के पिता कादियान के इलाका के ज़मीनदार थे। रईस थे जब वहाँ मुज़ारेओं के साथ एक पारिवारिक मुकदमा चल पड़ा और मुज़ारेओं के पक्ष में सच्चाई बयान कर इस मामले में आप ने अपने परिवार के वित्तीय नुकसान की कोई परवाह नहीं की बल्कि उन ग़रीब मुज़ारेओं ने भी यह ज्ञान होने कि आप मालिक हैं इसमें भागी दार हैं अदालत में आप की गवाही पर फैसला करने के लिए कहा क्योंकि उन्हें मालूम था कि आप हमेशा सही और इंसाफ की स्थापना करते हुए गवाही देंगे तो आप ने उनके पक्ष में गवाही दी।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 542-543)

अत: आप ये गुणवत्ता अपने मानने वालों में भी स्थापित फ़रमाना चाहते हैं कि आप वह जमाअत बनाना चाहते हैं और पैदा फरमाना चाहते हैं कि क़ुरआन के आदेश का पालन करने वाली हो जिसकी नेकियों की गुणवत्ता उच्च हों इसलिए आप ने बैअत के वादा में क़ुरआन की हुकूमत को पूर्ण रूप से अपने सिर पर स्वीकार करने का वादा हमसे लिया है।

कुरआन में एक दूसरी जगह अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى

(अल्माइदा: 9)

अर्थात दुश्मन राष्ट्रों की दुश्मनी तुम्हें इंसाफ से न रोके इंसाफ पर स्थापित रहो कि तक्वा इसी में है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "मैं सच सच कहता हूं कि दुश्मन से उत्तम व्यवहार से पेश आना आसान है लेकिन दुश्मन के अधिकारों की रक्षा करना और मामलों में इंसाफ को हाथ से न देना बहुत मुश्किल और केवल बहादुरों का काम है।" फरमाते हैं कि "अक्सर लोग अपने साझी दुश्मन से प्यार तो करते हैं और मीठी मीठी बातों से पेश आते हैं मगर उनके अधिकारों को दबा लेते हैं। एक भाई दूसरे भाई से प्यार करता है और प्यार की आड़ में धोखा देकर उसके अधिकार दबा लेता है।

(नूरुल कुरआन नम्बर 2 रूहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 409-410)

आप अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत के लोगों से यह अपेक्षा रखते हैं कि उनकी गुणवत्ता बहुत बुलंद हैं और वे कर्म हों जो कुरआन की शिक्षा के अनुसार हैं। अधिकार छीन लेने वालों और नाइंसाफी करने वालों में शामिल न हों। अगर निर्णय लेने का अधिकार मिले तो हर रिश्ते से ऊपर होकर फैसला हो चाहे इस फैसले से ख़ुद को नुकसान पहुंच रहा है या अपने माता पिता को नुकसान पहुंच रहा हो या क़रीबी रिश्तेदारों, अपने बच्चों को नुकसान पहुंच रहा हो लेकिन इंसाफ की उच्च गुणवत्ता बहरहाल स्थापित होनी चाहिए। तो यह नमूने जब हम आपस में स्थापित करेंगे तो दुनिया में भी कह सकेंगे कि आज हम जो अपने अंदर यह बदलाव लाकर और इस्लाम की शिक्षा पर अनुकरण करके दुश्मन से भी इंसाफ का हौसला रखते हैं और करते हैं। सच्ची गवाही देते हैं चाहे अपने ख़िलाफ हो। अपने माता पिता के ख़िलाफ हो या अपने बच्चों और अन्य करीबियों के ख़िलाफ देनी पड़े। ये नमूने हम इसलिए स्थापित कर रहे हैं कि भविष्य में विश्व का मार्गदर्शन हम ने करना है। अगर यह नमूना नहीं तो हम अल्लाह तआला की आज्ञाओं से दूर जाकर अपने पदों से विश्वासघात के दोषी हो रहे होंगे।

अत: हर अहमदी को और विशेष रूप से यहाँ मैं कहूँगा उहदेदारों को यह देखने की ज़रूरत है कि वे किस हद तक अपनी अमानतों के हक़ अदा करते हुए इंसाफ और निष्पक्षता के इस मानक पर कायम हैं कि उनका हर फैसला जो है वह इंसाफ के उच्च मानकों को प्राप्त करने वाला हो।

मैं कनाडा गया हूं तो वहां भी कुछ उहदेदारों या उन लोगों के बारे में जिनके पास नियमित पद तो नहीं लेकिन कुछ सेवाएं सौंपी गई हैं लोगों की कुछ शिकायत हैं कि इंसाफ से काम नहीं लेते। कुछ अपने करीबियों के पक्ष में फैसला की प्रवृत्ति रखते हैं या निर्णय करते हैं। यह ठीक है कि किसी न किसी के पक्ष में फैसला होना होता है और दूसरे पक्ष के ख़िलाफ फैसला होना है लेकिन दोनों पक्षों को यह तसल्ली होनी चाहिए कि हमारी बात सुनी गई है और सुनने के बाद फैसला करने वाले ने अपनी बुद्धि के अनुसार निष्कर्ष निकाला है। एक तो ऐसे मामलों में जिनकी सार्वजनिक

डीलिंग होती है उन में कज़ा का विभाग है जिनका इससे संबंध है, जो लोगों के आपस के मतभेद में फैसला करता है फिर अमूरे आमा का विभाग है इसका भी संबंध है कुछ न कुछ तो तरबियत विभाग है और इस्लाही कमेटी का भी काम है तो कुछ मामलों में अनुसंधान के लिए आयोग बने हैं उनका भी काम कई बार हो जाता है और आयोग भी पक्षों की बातें सुनता है। इसलिए हर क्षेत्र का काम है कि फैसला करते समय अपनी सारी क्षमताओं के साथ विचार और चिन्तन और सारी चीज़ों की बारीकी को सामने रखते हुए इस बारीकी को देखते हुए फैसला करे। दुआ करें अल्लाह तआला से मदद मांगें कि सही निर्णय की शक्ति दे। कोई फैसला करने से पहले दुआ अवश्य करनी चाहिए। कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम फैसला करने से पहले जब तक कुछ नफिल न पढ़ लें फैसला नहीं करते लेकिन ऐसे भी हैं जो कई बार लापरवाही से निर्णय कर जाते हैं या किसी निजी प्रवृत्ति के कारण निर्णय कर जाते हैं।

इसी तरह लोगों के मामलों और डीलिंग में जनरल सैक्रेटरी का विभाग है। जनरल सैक्रेटरी और उसके कार्यालय में काम करने वाले हर कार्यकर्ता का काम है कि हर आने वाले के साथ सम्मान और आदर से पेश आए। यह नहीं कि जो पसंदीदा लोग हैं और दोस्त हैं उनके लिए और व्यवहार हों और जो अनजान हैं या जिनके साथ संबंध अच्छे नहीं हैं उनके साथ नकारात्मक व्यवहार हों और इस बात की निगरानी बाकी क्षेत्रों के उहदेदारों को भी करनी चाहिए जिन की भी सार्वजनिक डीलिंग है कि उनके साथ काम करने वाला हर कार्यकर्ता और सहायक इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी करते हुए अपना काम कर रहा है या नहीं। यह अमानतें हैं जो काम करने वालों के सुपुर्द की गई हैं और किसी के सुपुर्द भी कोई सेवा करते समय इससे चाहे यह संकल्प लिया जाए या नहीं कि मैं अपने काम अपनी पूरी क्षमताओं के साथ इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी करते हुए पूरा करूंगा। इस का किसी भी सेवा को स्वीकार करना ही इस का वादा बन जाता है कि इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी करते हुए काम करना होगा (और) यह एक ऐसी अमानत है जिस की ज़िम्मेदारी स्वीकार करना विशेष रूप से अल्लाह तआला के लिए होनी चाहिए । वैसे तो हर मोमिन इस बात के लिए पाबन्द है कि वह अपनी अमानत और अहद की रक्षा करे और उसका हक़ अदा करे जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन में भी कहता है कि وَالَّذِيۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَعَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ (अल्मोमेनून :9) कि मोमिन वह हैं जो अपनी अमानतों और पदों का ख्याल रखते हैं लेकिन जो विशेष रूप से अल्लाह तआला के लिए काम करने वाले हैं या यह कहते हैं कि हम अल्लाह तआला के लिए यह काम कर रहे हैं उन्हें कितना सतर्क होना चाहिए।

एक साधारण मोमिन से भी बढ़कर जिनके ज़िम्मा विशेष रूप से ज़िम्मेदारियों की गई हैं। यहां यह भी स्पष्ट कर दूं कि केवल यह न समझें कि केंद्रीय अधिकारी ही संबोधित हैं बल्कि सदर और उनकी कार्यकारिणी के सदस्य भी शामिल हैं जिन्हें अपनी समीक्षा लेनी चाहिए कि वे इंसाफ की सभी आवश्यकताएँ पूरी कर रहे हैं? और यह केवल कनाडा की बात नहीं है जर्मनी से भी, और यहाँ भी और दूसरे कुछ देशों में भी यही शिकायतें हैं। इसलिए हर जगह अपने व्यवहार को सही करने की ज़रूरत है वरना इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी न कर के न केवल अमानत और पदों का ख्याल नहीं रख रहे होंगे बल्कि विश्वासघात के दोषी हो रहे हैं और अल्लाह तआला फरमाता है कि वह विश्वासघात करने वालों को पसंद नहीं करता। सेवा कर के इनाम लेने के स्थान पर नाइंसाफियाँ करके या अहंकार पूर्ण व्यवहार दिखाकर अल्लाह तआला की नाराज़गी लेने वाले बन जाते हैं। इसलिए जहां त्रुटियां हों वहाँ ग़लतियों को छिपाने के लिए बहाना तलाश करने के स्थान पर ग़लत प्रकार के बहाने खोजने के स्थान पर इस्तिग़फार करते हुए अपने सुधार की कोशिश करनी चाहिए। इसलिए हमारे उहदेदारों को अपना आकलन करना चाहिए कि क्या वे अल्लाह तआला के बताए हुए नियम के अनुसार इंसाफ की सभी आवश्यकताएँ पूरी कर रहे हैं।? अपने काम से भी इंसाफ कर रहे हैं और जिन से वास्ता पड़ रहा है उन से भी इंसाफ कर रहे हैं।? केवल सदर होना या सैक्रेटरी होना या अमीर होना कोई हैसियत नहीं रखता न किसी की माफी के सामान पैदा करने वाले हैं यह पद न ही अल्लाह तआला और उसकी जमाअत पर कोई एहसान है। अगर यह अपनी अमानतों और पदों के इस तरह हक़ अदा नहीं कर रहे जिस तरह ख़ुदा तआला चाहता है और शुद्ध होकर अदा नहीं कर रहे तो कोई लाभ नहीं। इसलिए शुद्ध होकर अल्लाह तआला के लिए प्रत्येक अधिकारी को काम करना चाहिए और हर फैसले में इंसाफ के सभी आवश्यकताएँ पूरी करें। अगर कोई मामला सामने आया जिसके बारे में पहले ग़लत फैसला हो चुका है तो जैसा कि मैंने कहा अपनी ग़लती स्वीकार करते हुए इन फैसलों को ठीक करें अपने आचरण को भी ठीक करें और अल्लाह तआला के इस आदेश को भी याद रखें कि وَقُوۡلُوۡا لِلنَّاسِ حُسۡنًا (अल्बकर: 84) कि लोगों के साथ नरमी और आसानी से बात करो उच्च नैतिकता से बात करो।

जैसा कि मैंने कहा कि दुनिया के हर देश में उहदेदारों को अपनी समीक्षा लेने की ज़रूरत है। अगर कनाडा का उदाहरण मैंने दिया है ये विचार आया तो इसलिए कि वहां लोगों में ग़ैरों में जमाअत अधिक जानी जाती है और अब इस सफर के बाद अधिक परिचय बढ़ा है और हम लोगों की नज़र में दूसरों की नज़र में अधिक हैं। इसलिए इस बारे में हमें हर मामले में अपने नमूने स्थापित करने की ज़रूरत है। हमारा प्रत्येक उहदेदार विशेष रूप से और हर अहमदी आमतौर पर दुनिया के सामने एक रोल मॉडल होना चाहिए। जहां दुनिया में फ़ित्ने दंगे और अराजकता और अधिकार छीन लेने के नमूने नज़र आते हैं वहाँ जमाअत में इंसाफ और अधिकार के अदा करने के नमूने दिखने चाहिए। इस परिचय से दुनिया वाले देखेंगे कि जमाअत कैसी है। हर व्यक्ति जो है वह एक नमूना है।

अत: हर अहमदी को यह याद रखना चाहिए कि ज़िम्मेदारी केवल उहदेदारों की ही नहीं है हर अहमदी की भी ज़िम्मेदार है। उसकी ज़िम्मेदारी है कि वे आपस के संबंध में आदर्श नमूना स्थापित करें। इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी करें अपने आचरण को उच्च गुणवत्ता तक पहुँचाएँ। एक दूसरे के मामलों में पूरी तरह से किसी भी प्रकार की तरफदारी से अपने आप को पवित्र करें। किसी भी पक्ष की तरफ उनका झुकाव न हो। अहमदी की गवाही और बयान अपने इंसाफ और सच्चाई के मामले में एक उदाहरण बन जाए और दुनिया कहे कि अगर अहमदी ने गवाही दी है तो फिर उसे चुनौती नहीं दी जा सकती क्योंकि यह गवाही इंसाफ की उच्च गुणवत्ता पर पहुंची हुई है। अगर हम यह कर लें तो हम अपने भाषणों में अपनी बातों में अपनी तब्लीग़ में सच्चे हैं वरना फिर जैसे अन्य वैसे ही हम।

प्रत्येक अहमदी को याद रखना चाहिए कि हम ने अपनी बैअत के वादे में सारी प्रकार की बुराइयों से बचने का वादा किया है और वादा पर ध्यान न देना और जानबूझ कर उस पर अनुकरण न करना विश्वासघात है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक वास्तविक मोमिन की निशानी बयान फरमाते हुए फरमाते हैं कि किसी व्यक्ति के मन में ईमान और कुफ्र तथा सच्चाई और झूठ इकट्ठे नहीं हो सकते और न ही अमानत और विश्वासघात इकट्ठे हो सकते हैं।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 3 पृष्ठ 320 हदीस 8577 प्रकाशक अल्कुतुब बैरूत 1998 ई)

फिर एक हदीस में आपने फरमाया कि उहदेदारों को भी सामने रखनी चाहिए और हर अहमदी को भी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि तीन मामलों के बारे में मुसलमान का दिल विश्वासघात नहीं कर सकता और वह तीन बातें हैं ख़ुदा तआला के लिए काम में ईमानदारी दूसरे हर मुसलमान के लिए खैरख्वाही और तीसरे मुसलमानों की जमाअत के साथ मिल कर रहना।

(सुनन तिर्मज़ी हदीस 2658)

इसलिए जैसा कि मैंने कहा कि अल्लाह तआला के धर्म के दायित्वों का अदा करना और इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी करते हुए अदा करना और ईमानदारी से अदा करना यही अल्लाह तआला की अमानत का हक देना है। इसी तरह हर व्यक्ति के लिए दूसरे का हक देना भी ज़रूरी है। जब हम में से प्रत्येक इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी करते हुए एक दूसरे का हक़ देने वाला बन जाएगा हक प्राप्त करने की दौड़ अपने आप समाप्त हो जाएगी। यह नहीं होगा कि मेरा हक दो बल्कि हक़ देने वाले होंगे और यही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक वास्तविक मुसलमान की निशानी बताई है और फिर हर अहमदी को याद रखना चाहिए कि मुसलमानों की जमाअत से चिमटे रहना जो है यही वास्तविक मुसलमान बनाता है।

इस समय दुनिया में सिर्फ और सिर्फ एक ही जमाअत है जो जमाअत अहमदिया मुस्लिमा कहताली है और यही एक जमाअत है जो दुनिया में एक नाम से पहचानी जाती है और इसके अतिरिक्त और कोई अंतरराष्ट्रीय जमाअत नहीं जो दुनिया में एक नाम से जानी जाती है। इसलिए इसके साथ जुड़े रहना और जमाअत की प्रणाली का हिस्सा बनना आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार वास्तविक मुसलमान बनाता है। इस ख़ुश किस्मती पर हर अहमदी जितना

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 2 Thursday 5-12 January 2017 Issue No. 1-2

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

भी धन्यवाद करे कम है और वास्तविक धन्यवाद यही है कि जमाअत की प्रणाली की पूरी इताअत ख़िलाफत का पालन करता हो। अल्लाह तआला प्रत्येक अहमदी को धन्यवाद की तौफ़ीक़ प्रदान करे। प्रत्येक अहमदी को यह तौफ़ीक़ प्रदान करे कि वे इंसाफ की आवश्यकताएँ पूरी करने वाले बनें। कभी किसी भी प्रकार की अगर गवाहियों की ज़रूरत पड़े तो उसमें ख़यानत करने वाले न हों। जमाअत का हर अधिकारी अपने दायित्वों को समझे अपने पदों और अपनी अमानतों को पूरा करने वाला और अदा करने वाला हो। अपनी सभी ज़िम्मेदारियों को इंसाफ की आवश्यकता को पूरा करते हुए अदा करने वाला हो। यह सुंदर शिक्षा हमारी नस्लों में भी जारी रहे और इसके लिए हमें कोशिश भी करनी चाहिए ताकि जब समय आए तो हम दुनिया में वास्तविक इंसाफ करके दिखाने वाले हों। वह इंसाफ जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्थापित किया और जिसके नमूने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने स्थापित करे इस युग में भी और जिसकी उम्मीद आप ने अपने मानने वालों से भी रखी। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफीक भी प्रदान करे।

नमाज़ के बाद कुछ नमाज़ा जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा आदरणीय अदनान मुहम्मद कुरदिया साहिब का है जो हलब सीरिया के रहने वाले थे। जिन्हें 2013 ई में सीरिया की एक आतंकवादी संगठन ने अपहरण किया था इसके बाद शहीद किया। अदनान साहब का जन्म 1971 ई में सीरिया के शहर हलब में हुआ। 2003 ई में उन्होंने तमाज़र साहिबा से शादी की। अदनान साहिब के ससुर यासीन शरीफ साहिब 2007 ई में बैअत कर के जमाअत में शामिल हुए तो फिर उनकी तब्लीग़ से उनकी बेटी तमाज़र भी अहमदियत की प्रामाणिकता को मानने वाली हुईं और अदनान साहिब के घर में अहमदियत के बारे में बातें होने लगीं लेकिन अदनान शहीद साहिब पढ़े लिखे नहीं थे। अक्सर मौलवियों के पीछे चलते थे जब उनकी पत्नी ने 2010 ई में बैअत कर ली तो मौलवियों के उकसाने पर उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि यदि घर में एम.टी.ए देखोगी या अहमदियत के बारे में बात करोगी तो मैं तुम्हें तलाक दे दूंगा। उनके ससुर यासीन शरीफ साहब उन्हें कुरआन और सुन्नत के बारे में समझाते थे तो चुप हो जाते। जब मौलवियों के पास जाते तो फिर सारी बातें भूल जाते। शहीद के ससुर कहते हैं कि 2011 ई की बात है कि उनके घर में उनकी पत्नी अर्थात अपनी बेटी के साथ कुरआन पढ़ रहा था कि इतने में अदनान भी काम से वापस आ गया और हमें कुरआन पढ़ता देख कर कहने लगा कि पढ़ते रहें क्योंकि आपकी तफसीर सुनना चाहता हूँ। हम उस समय सूर: बनी इस्राईल की यह आयत पढ़ रहे थे اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا (बनी इस्राईल: 48) अर्थात जब ज़ालिम लोग कहते हैं तुम एक ऐसे व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो जिस पर जादू हुआ है। उनके ससुर कहते हैं कि मैंने अदनान से कहा कि कुरआन कहता है कि वे लोग ज़ालिम हैं जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह आरोप लगाते हैं कि नऊज़ो बिल्लाह आप पर जादू हुआ था मगर कुछ मुसलमान इस बात को मानते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जादू हुआ था जबकि जमाअत अहमदिया का ईमान है कि यह बात बिल्कुल ग़लत है और ऐसी किसी रिवायत को स्वीकार नहीं किया जा सकता। अदनान ने यह बात सुनते ही आदत के अनुसार तुरंत फोन उठाया और अपने मौलवी से पूछा कि क्या वास्तव में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जादू हुआ था। मौलवी साहिब ने कहा कि हां हुआ था और इसका उल्लेख बुख़ारी में है। अदनान साहिब ने मौलवी को कहा कि मैं एक साधारण सा और गुनहगार आदमी हूँ। मुझे पता है कि मेरे कुछ क़रीबी व्यक्तियों ने मुझ पर जादू करने की कोशिश की लेकिन मुझ पर इसका कोई असर नहीं हुआ। जबकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के अंतरंग सर्वोत्तम और सबसे प्यारे नबी थे तो मैं यह कैसे मान लूँ कि कुछ लोग उन पर जादू करने में सफल हो गए यह कहकर उन्होंने फोन बंद कर दिया और उनकी पत्नी कहती हैं कि इस घटना के कुछ दिन बाद अदनान सोच विचार करते रहे फिर एक दिन मुझे कहने लगे कि मेरी इच्छा थी कि मेरी पत्नी अच्छा आचरण और कार्यों की मालिक हो मैंने देखा है कि जब से तुम ने अहमदियत स्वीकार की है तुम्हारे अंदर बहुत अच्छा बदलाव हुआ है तथा बच्चों और मेरे रिश्तेदारों के साथ बेहतर आचरण से पेश आने लगी यह प्रभाव ख़ुदा तआला की तरफ से है इसलिए मैं भी इस मुबारक जमाअत में शामिल होता हूँ। इसलिए उन्होंने बैअत कर ली। शहीद की पत्नी बताती हैं कि एक चरमपंथी संगठन के कुछ सदस्यों ने जो जमाअत के ख़िलाफ बहुत अपमानजनक बातें किया करते थे। मुझे उनकी बातें सुनकर बहुत दु:ख होता। जब मैं इसके बारे में अदनान को बताती तो वह कहता कि उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो और कभी उनसे बहस न करना हमारा काम सिर्फ उनके लिए दुआ करना है। फिर 20 जून 2013 ई को इस संगठन के कुछ सदस्यों ने अदनान को अग़वा कर लिया और लगभग दो महीने के बाद उन्हें गोली मार कर शहीद कर दिया गया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। शहादत के समय उनकी उम्र 42, 43 साल थी। कहती हैं यद्यपि मुझे उनकी शहादत के विषय में ख़्वाबें तो आ रही थीं लेकिन ऐसी कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई थी। एक दिन हमारे क्षेत्र के विरोधियों में से एक व्यक्ति ने मुझे कहा कि तुम अब तक अपने पति का इंतज़ार कर रही हो। वह नहीं आएगा क्योंकि उसे मार दिया गया है। हम ने उसे बहुतेरा समझाया था कि अहमदियत छोड़ दो लेकिन वह यही कहता था कि मैं अहमदियत नहीं छोड़ूँगा चाहे मेरी गर्दन कट जाए। इसलिए वह शहादत तो बड़ी पुरानी हो गई है लेकिन पता क्योंकि उन्हें अब चला है इस लिए नमाज़ जनाज़ा अब अदा किया जा रहा है।

शहीद की पत्नी लिखती हैं कि शहीद नेक सालेह और नमाज़ों के पाबन्द थे हमेशा वज़ू के साथ रहने की कोशिश करते हैं। एक सहानुभूति और प्यार करने वाला पति और शफीक पिता थे। बच्चों की धार्मिक तरबियत की हमेशा उन्हें चिंता रहती। प्रत्येक की मदद तथा सेवा करने वाले और रिश्ते दारों का ध्यान रखने की भावना रखते थे। चन्दों में नियमित और सबसे आगे बढ़ने की कोशिश करते। उनके ससुर कहते हैं कि अहमदियत स्वीकार करने के बाद एक अजीब ईमानदारी पैदा हो गई थी और उन्होंने अपनी वैगन अहमदियों के लिए समर्पित कर दी। जुम्अ: के दिन अहमदियों को विभिन्न स्थानों से नमाज़ केंद्र में लाते फिर वापस भी छोड़ते। इसी तरह औरतों को भी इज्लास के लिए सदर लजना के घर तक लाने और वापस जाने के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करते। अहमदी दोस्त उन्हें किराया देने की कोशिश करते तो वह लेने से मना कर देते और अगर कोई बहुत ज़ोर देता तो तेल का खर्च ले लेते। चंदों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते और अक्सर कहा करते थे कि इन चन्दों के कारण अल्लाह तआला ने मेरे काम में बहुत बरकत डाली है और इसका उदाहरण वह देते कि उन्होंने किसी के साथ मिलकर एक वैगन ख़रीदी था जो वह चलाया करते थे और उसके बाद फिर अल्लाह तआला ने उन्हें बरकत दी कि वह भागीदारी से अलग हो वह सारी वैगन ख़ुद ही ख़रीद ली। उनकी एक और रिश्तेदार हैं वह कहती हैं कि रिश्तेदारों से उत्तम व्यवहार की विशेषता उनमें बहुत स्पष्ट थी। कहती हैं जब हमारे क्षेत्र में दंगे बढ़े युद्ध की स्थिति पैदा हुई हालात बहुत ख़राब हुए तो रोटी दुर्लभ हो गई और अगर कहीं मिलती थी फिर बहुत महंगी मिलती थी ऐसे में अदनान शहीद सभी रिश्तेदारों की सेवा में लगे थे। वे दूरदराज़ के क्षेत्रों से रोटी लाकर हमें दिया करते थे।

शहीद ने अपने पीछे पत्नी और पांच बच्चे छोड़े हैं दो बेटियां उन की पहले फौत पत्नी से थीं जबकि दो बेटे और एक बेटी दूसरी पत्नी से हैं। अल्लाह तआला की कृपा से यह सब कनाडा पहुंच चुके हैं।

दूसरा जनाज़ा आदरणीया बशीर बेगम साहिबा पत्नी चौधरी मंज़ूर अहमद साहिब चीमा दरवेश कादियान का है जो 7 नवम्बर 2016 ई को 93 साल की उम्र में विभिन्न बीमारियों के बाद वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। 1923 ई में पाकिस्तान में पैदा हुईं। (उस समय पाकिस्तान तो नहीं था भारत में पैदा हुईं।) 1944 ई में आदरणीय चौधरी मंज़ूर अहमद साहब चीमा के साथ शादी हुई। चीमा साहिब ने नवंबर 1947 में केंद्र की रक्षा के लिए जब कादियान आने के लिए वक्फ किया तो यह भी 1952 ई में कादियान आकर

शेष पृष्ठ 8 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad